Set of 2 Hindi Books

आधुनिक भारत का इतिहास
और
भारत की कला एवं संस्कृति

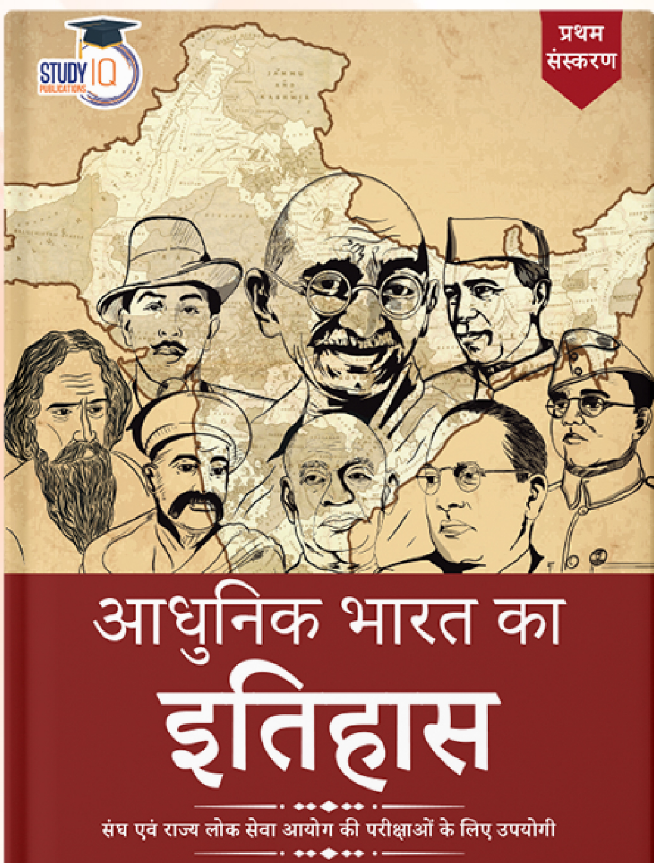

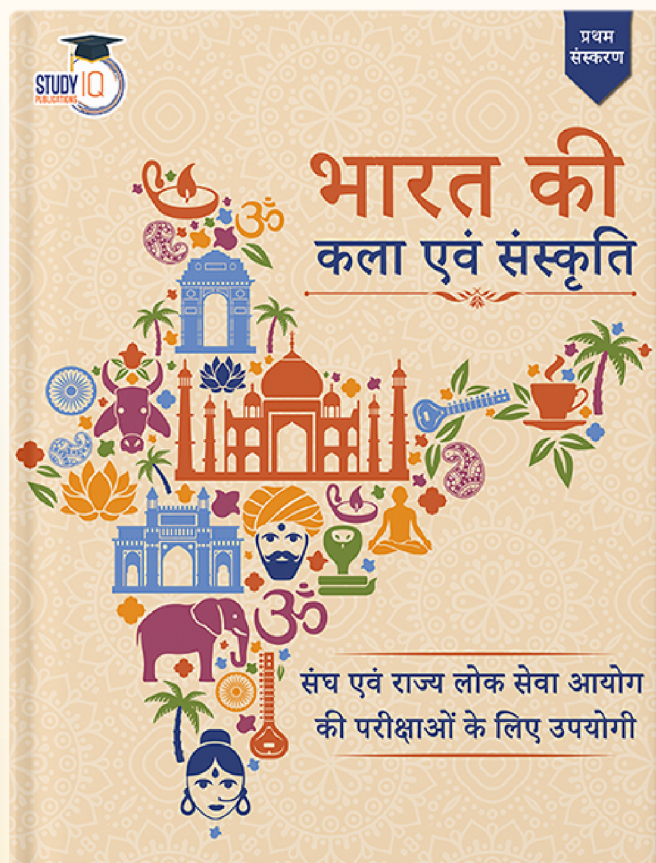

STUDY IQ PUBLICATIONS

प्रथम संस्करण

आधुनिक भारत का इतिहास

संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के लिए उपयोगी

संस्थापक की कलम से

प्रिय साथियों,

हमारी पिछली किताबों (भारत का भूगोल, भूगोल तथ्य एवं सिद्धांत, तथा भारत की राजव्यवस्था) को मिली शानदार प्रतिक्रिया के लिए हम आपको विनम्रतापूर्वक धन्यवाद देना चाहते हैं। हमारी किताबें लॉन्च होने के बाद से ही यूपीएससी सेगमेंट में अमेजन और फ्लिपकार्ट के लिए बेस्ट सेलर लिस्ट में हैं।

संघ लोकसेवा आयोग के लिए सर्वोत्कृष्ट, हमारी पूर्व की किताबों को मिली भारी सकारात्मक प्रतिक्रिया से प्रेरणा लेते हुए, हम सभी छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लोकतंत्रीकरण करने के अपने मिशन की दिशा में एक और कदम आगे बढा लगा रहे हैं। स्टडी आईक्यू पब्लिकेशन आपको हमारी पुस्तक 'आधुनिक भारत का इतिहास' के पहले संस्करण के साथ प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं।

यह पुस्तक उन चिंताओं और चुनौतियों को ध्यान में रखकर बनाई गई है, जिनका सामना छात्रों को सिविल सेवा की तैयारी के दौरान करना पड़ता है। छात्र अक्सर भ्रमित होते हैं कि क्या अध्ययन करना है, कितना अध्ययन करना है, किसी विषय के लिए आवश्यक ज्ञान की गहराई और आयोग द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों के प्रकार। इन सबसे ऊपर, समेकित अध्ययन सामग्री की अनुपस्थिति और कई स्रोतों से सूचना हमारे छात्रों की तैयारी में बाधा डालती है।

यह पुस्तक इन समस्याओं से निपटने और छात्रों के ज्ञान के आधार में सुधार करने, उनकी तैयारी के दौरान उनके कीमती समय की बचत करने और उनके सामने आने वाली कई शैक्षणिक गलतफहमियों को दूर करने का एक ईमानदार प्रयास है।

इस पुस्तक की प्रमुख विशेषताएं:

- इस पुस्तक का उद्देश्य यूपीएससी की वर्तमान प्रवृत्तियों और पैटर्न के आधार पर आपकी तैयारी को केंद्रित और प्रासंगिक, पुनरीक्षण-अनुकूल और अप-टू-डेट बनाना है।
- यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की आवश्यकताएं इस पुस्तक का विशेष फोकस हैं।
- हमने यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत सावधानी बरती है कि सामग्री स्पष्ट और आसानी से समझ में आने वाली हो, ताकि छात्र अपने लाभ के लिए अवधारणाओं को सीख सकें और याद कर सकें।
- जहां भी आवश्यक हो, हमने छात्रों को मौलिक अवधारणाओं को समझने में मदद करने के लिए प्रासंगिक उदाहरण, ऐतिहासिक मामले और तालिकाओं को शामिल किया है।
- हमने प्रत्येक अध्याय के अंत में प्रासंगिक पिछले वर्ष के प्रश्नों को शामिल किया है ताकि छात्र प्रश्न की प्रवृत्ति को समझते हुए अपने ज्ञान का परीक्षण कर सकें।
- पूरी ईमानदारी और विनम्रता के साथ, स्टडी आईक्यू टीम आपकी तैयारी में सर्वश्रेष्ठ होने की कामना करती है, और हमें उम्मीद है कि यह पुस्तक आपकी यात्रा में आपकी मदद करेगी।

Happy Learning!!

Mohit Jindal, IIT-Bombay
Co-Founder, Study IQ Education,
Mentoring UPSC CSE Aspirants for past 7 years

विषय सूची

1. मुगल साम्राज्य का पतन......................................1

1.1 उत्तरवर्ती मुगल शासन और पतन की प्रक्रिया 2

1.1.1 बहादुर शाह प्रथम/शाह आलम प्रथम का शासन (1707–1712 ई.)....................2

1.1.2 जहाँदार शाह का शासन काल (1712–1713 ई.) 3

1.1.3 फर्रुखसियर का शासन काल (1713–1719 ई.) 4

1.1.4 मुहम्मद शाह (रंगीला) का शासनकाल (1719–1748 ई.) 5

1.1.5 अहमद शाह का शासनकाल (1748–1754 ई.) 7

1.1.6 आलमगीर द्वितीय का शासन (1754–1759 ई.) 7

1.1.7 शाह आलम द्वितीय/अली गौहर का शासन काल (1759–1806 ई.) 7

1.1.8 अकबर द्वितीय (1806–1837 ई.)........8

1.1.9 बहादुर शाह द्वितीय/जफर (1837–1857 ई.) 8

1.2 मुगल साम्राज्य के पतन के कारण 9

1.2.1 मुगल साम्राज्य के पतन के बारे में सिद्धांत और विचार..............................9

2. क्षेत्रीय राज्यों का उदय.................................... 13

2.1 उत्तराधिकारी राज्य.................................... 14

2.1.1 हैदराबाद..14

2.1.2 बंगाल..16

2.1.3 अवध..18

2.2 विद्रोही राज्य..20

2.2.1 सिक्ख राज्य.......................................20

2.2.2 रोहिल्ला और बंगश पठान...................22

2.2.3 जाट 23

2.2.4 मराठा 23

2.3 स्वतंत्र राज्य...27

2.3.1 केरल 27

2.3.2 मैसूर...27

2.3.3 मैसूर का प्रशासन..............................28

2.3.4 राजपूत 30

2.4 18वीं शताब्दी के दौरान सामाजिक और आर्थिक स्थितियाँ....................................32

2.4.1 कृषि 32

2.4.2 व्यापार..32

2.4.3 शिक्षा 33

2.4.4 सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन.........34

2.4.5 परिवार प्रणाली..................................34

2.4.6 कला, संस्कृति और वास्तुकला............35

2.4.7 साहित्य...35

2.4.8 विज्ञान..36

3. यूरोपियों का आगमन...................................... 37

3.1 यूरोपीय बस्तियों की शुरुआत................... 38

3.2 पुर्तगाली 40

3.2.1 पुर्तगाली शाही अधिकारी.....................40

3.2.2 भारत में पुर्तगालियों के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ.......................................42

3.2.3 भारत में पुर्तगाली प्रशासन और उनकी बस्तियाँ...42

3.2.4 मुगलों से निपटना और पुर्तगालियों का पतन...43

3.3 डच...45

3.3.1 भारत में डच बस्तियाँ.........................47

3.3.2 भारत में डचों का पतन.......................48

3.4 ब्रिटिश/अंग्रेज 48

3.4.1 ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापार का विकास (1600–1744) 49

3.4.2 ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापार का प्रभाव 51
3.4.3 ईस्ट इंडिया कंपनी का आंतरिक संगठन 52
3.5 फ्रांसीसी 53
3.5.1 फ्रांसीसियों का विस्तार और असफलता 53
3.5.2 एंग्लो-फ्रेंच (आंग्ल-फ्रांसीसी) प्रतिद्वंद्विता 55
3.6 डेनिश 57
4. भारत पर ब्रिटिश विजय (1756-1857)....... 60
4.1 बंगाल पर विजय....................61
4.1.1 बंगाल में अंग्रेजों का उदय 61
4.1.2 बंगाल का पतन....................61
4.1.3 प्लासी का युद्ध....................62
4.1.4 मीर कासिम और ईस्ट इंडिया कंपनी....64
4.1.5 बक्सर का युद्ध (1764)....................65
4.2 प्रभुत्व (वर्चस्व) के लिए कंपनी का संघर्ष 67
4.2.1 कंपनी के विलय की विशेषताएँ (1757-1857)....................67
4.3 मैसूर पर विजय....................68
4.3.1 एंग्लो-मैसूर युद्ध (आंग्ल-मैसूरयुद्ध).....68
4.4 मराठों पर विजय....................71
4.4.1 मराठों का राजनीतिक परिदृश्य............71
4.4.2 आंग्ल-मराठा युद्ध....................71
4.5 सिंध पर विजय....................73
4.6 पंजाब की विजय 74
4.6.1 आंग्ल-सिक्ख युद्ध....................74
5. ब्रिटिश साम्राज्य की शासन व्यवस्था और आर्थिक नीतियों की संरचना (1757-1857). 76
5.1 कंपनी राज के तहत सरकार की संरचना .. 78
5.2 कंपनी राज के तहत संवैधानिक विकास ... 79
5.2.1 रेगुलेटिंग एक्ट (1773)....................79
5.2.2 पिट्स इंडिया एक्ट (1784)................81
5.2.3 चार्टर एक्ट (1793)....................82
5.2.4 चार्टर अधिनियम (1813)..................83
5.2.5 चार्टर अधिनियम (1833)..................84
5.2.6 चार्टर अधिनियम (1853)..................85
5.3 ब्रिटिश आर्थिक नीति....................87
5.3.1 वाणिज्यिक नीति....................87
5.3.2 औद्योगिक क्रांति....................88
5.3.3 धन की निकासी....................91
5.3.4 परिवहन और संचार के साधनों का विकास....................92
5.4 भू-राजस्व नीति....................93
5.5 भू-राजस्व बंदोबस्त के प्रकार:..................93
5.5.1 स्थायी बंदोबस्त....................93
5.5.2 रैयतवाड़ी बंदोबस्त....................94
5.5.3 महालवारी/महालवाड़ी प्रणाली..............95
6. ब्रिटिश साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था......... 99
6.5.1 नागरिक सेवाएँ (सिविल सर्विस).......100
6.5.2 सेना....................102
6.5.3 पुलिस....................102
6.5.4 न्यायिक संगठन....................104
6.1 ब्रिटिश शासन के तहत सामाजिक, सांस्कृतिक और शिक्षा नीति 106
6.1.1 सामाजिक नीति....................106
6.1.2 सांस्कृतिक नीति....................106
6.1.3 शिक्षा नीति और इसका प्रभाव...........107
6.1.4 परिवहन और संचार के साधनों का विकास....................109
7. सामाजिक सुधार आंदोलन 110
7.1 सुधार: औचित्य....................111
7.1.1 ब्रिटिश शासन का प्रभाव..................112
7.1.2 सामाजिक परिस्थितियों ने सुधारों को बढ़ावा दिया....................112
7.2 सुधारों की पद्धति और कार्यक्षेत्र............113
7.2.1 सुधारों का दायरा 113
7.2.2 सुधार के तरीके....................113

7.3 सुधार आंदोलनों के प्रकार......................114

7.4 पूर्वी भारत में सुधार..............................114

7.4.1 राजा राममोहन राय और ब्रह्म समाज..114

7.4.2 पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के नेतृत्व में सुधार आन्दोलन...............................118

7.4.3 यंग बंगाल आंदोलन और हेनरी विवियन डेरोजियो...119

7.4.4 रामकृष्ण आंदोलन और स्वामी विवेकानंद 120

7.4.5 स्वामी विवेकानंद (1863-1902)......120

7.4.6 धर्म सभा...122

7.5 पश्चिमी भारत में सुधार 122

7.5.1 बाल शास्त्री जांभेकर (1812-1846) 123

7.5.2 परमहंस मंडली 123

7.5.3 गोपाल गणेश आगरकर (1856-1895) 123

7.5.4 गोपालहरि देशमुख 'लोकहितवादी' (1823-1892) 124

7.5.5 प्रार्थना समाज..................................124

7.5.6 सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी..........125

7.5.7 सोशल सर्विस लीग..........................127

7.6 दक्षिण भारत में सुधार आंदोलन............127

7.6.1 श्री नारायण गुरु...............................128

7.6.2 आत्म-सम्मान आंदोलन.....................129

7.6.3 मंदिर प्रवेश आंदोलन........................130

7.6.4 न्याय आंदोलन.................................131

7.7 पारसियों द्वारा किया गया सुधार.............131

7.7.1 सेवा सदन.......................................131

7.8 सिंह सभा आंदोलन...............................132

7.8.1 सिंह सभा आंदोलन का उद्देश्य..........132

7.8.2 अकाली आंदोलन (गुरुद्वारा सुधार आंदोलन)..132

7.9 उत्तर भारत में सुधार आन्दोलन..............133

7.9.1 दयानंद सरस्वती और आर्य समाज......133

7.9.2 दयानंद सरस्वती और आर्य समाज......134

7.9.3 आर्य समाज में मतभेद......................135

7.9.4 देव समाज.......................................136

7.10 मुसलमानों के बीच सुधार आंदोलन........136

7.10.1 वहाबी/वलीउल्लाह आंदोलन.............136

7.10.2 फराजी आंदोलन..............................137

7.10.3 सर सैयद अहमद खान और अलीगढ़ आंदोलन..137

7.10.4 अलीगढ़ आंदोलन 138

7.10.5 टीटू मीर आंदोलन...........................139

7.10.6 अहमदिया आंदोलन.........................139

7.10.7 देवबंद संप्रदाय (स्कूल)...................140

7.11 अन्य सुधार आंदोलन.............................140

7.11.1 थियोसोफिकल आंदोलन...................140

7.11.2 भारत धर्म महामंडल........................141

7.11.3 भारतीय सामाजिक सम्मेलन..............141

7.12 सुधार आंदोलनों का महत्व.....................141

7.13 आंदोलनों की वर्गीकृत...........................142

8. 1857 का विद्रोह और 1858 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन 145

8.1 1857 के महान विद्रोह से पहले सिपाही विद्रोह...146

8.1.1 महत्वपूर्ण सिपाही विद्रोह..................146

8.1.2 विद्रोह के कारण.............................146

8.2 1857 का विद्रोह 147

8.2.1 प्रमुख कारण...................................147

8.2.2 विद्रोह की शुरुआत.........................149

8.2.3 विद्रोह के केंद्र................................150

8.2.4 विद्रोह का दमन..............................152

8.2.5 विद्रोह की असफलता का कारण.......153

8.3 1857 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन........154

8.3.1

9. पड़ोसी देशों के साथ ब्रिटिश भारत के संबंध156

9.1 आंग्ल-बर्मा संबंध..................................157

9.1.1 प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध (1824-26)..157

9.1.2 द्वितीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1852).......158
9.1.3 तृतीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1885).......159
9.2 आंग्ल-नेपाल संबंध................................160
9.3 आंग्ल-भूटान संबंध................................160
9.4 आंग्ल-अफगान संबंध............................162
9.5 आंग्ल-तिब्बत संबंध...............................165
9.6 ब्रिटिश भारत और उत्तर-पश्चिम सीमा...166
9.6.1 लॉर्ड कर्जन के उपाय.......................166
10. जन एवं जनजातीय विद्रोह............................168
10.6.1 विद्रोह के पीछे के कारक................169
10.1 जन विद्रोह...169
10.1.1 नागरिक विद्रोह की विशेषताएं...........169
10.1.2 महत्वपूर्ण नागरिक विद्रोह..................169
10.2 जनजातीय विद्रोह..................................179
10.2.1 जनजातीय विद्रोहों का वर्गीकरण........179
10.2.2 जनजातीय विद्रोहों की विशेषताएं........179
10.2.3 मुख्य भूमि के जनजातीय आंदोलन.....180
11. 1857 से पूर्व व पश्चात् किसान आंदोलन और विद्रोह.. 188
11.1 किसान आंदोलनों को प्रभावित करने वाले कारक...189
11.1.1 1) कृषि का ह्रास और गतिहीनता.....189
11.1.2 2) कृषि का व्यावसायीकरण............190
11.1.3 3) किसान की निर्धनता...................191
11.2 भारत में किसान आंदोलनों की विशेषताएं 192
11.2.1 1857 से पूर्व...................................192
11.2.2 1857 के बाद..................................192
11.2.3
11.3 1857 से पहले किसान आंदोलन...........194
11.3.1 नारकेलबेरिया विद्रोह (1782-1831).194
11.3.2 फराजी विद्रोह (1838-1857)..........194
11.3.3 पागल पंथी (1825 से 1835)..........194
11.3.4 मोपला/मप्पिला विद्रोह/मालाबार विद्रोह (1836-1854 और 1920)...............195
11.4 1857 के बाद किसान आंदोलन............195
11.4.1 नील विद्रोह (1859-60).................195
11.4.2 पाबना कृषक लीग (1870-1880)...196
11.4.3 दक्कन दंगे : 1870 का दशक.........197
11.5 किसान आंदोलनों का विश्लेषण............198
12. राष्ट्रवाद का विकास और कांग्रेस की स्थापना 199
12.1 आधुनिक राष्ट्रवाद के विकास के लिए उत्तरदायी कारक..................................200
12.1.1 देश का प्रशासनिक एकीकरण...........200
12.1.2 देश का आर्थिक एकीकरण...............200
12.1.3 आधुनिक पश्चिमी विचारों को आत्मसात करना...201
12.1.4 अंग्रेजी भाषा की भूमिका..................201
12.1.5 प्रेस और साहित्य की भूमिका............201
12.1.6 भारत के अतीत की पुनर्खोज............201
12.1.7 सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन.....202
12.1.8 मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों का उदय.......202
12.1.9 समकालीन आंदोलनों का वैश्विक प्रभाव 202
12.1.10 प्रतिक्रियावादी नीतियाँ और शासकों का नस्लीय अहंकार...............................202
12.2 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पहले राजनीतिक संगठन..203
12.2.1 बंगाल में राजनीतिक संगठन..............203
12.2.2 बंबई में राजनीतिक संगठन................204
12.2.3 मद्रास में राजनीतिक संगठन...............204
12.2.4 लंदन में राजनीतिक संगठन................204
12.3 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी)......204
12.3.1 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना....204
12.3.2 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लक्ष्य और उद्देश्य 205
12.3.3 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का महत्व......206

12.4 राष्ट्रीय आंदोलन के चरण......................206

12.5 नरमपंथियों का दौर (1885-1905)......207

12.5.1 उदारवादियों का दृष्टिकोण.................207

12.5.2 नरमपंथी राष्ट्रवादियों का योगदान.......207

12.5.3 प्रारंभिक राष्ट्रवादियों का मूल्यांकन.....209

12.5.4 नरमपंथ चरण में जनता की भूमिका..209

12.5.5 सरकार का रवैया.............................209

13. उग्र राष्ट्रवाद और स्वदेशी आंदोलन (1903-1909) का विकास......................... 211

13.1 उग्र राष्ट्रवाद का दौर.............................212

13.1.1 उग्र राष्ट्रवादियों का विकास...............212

13.1.2 उग्र राष्ट्रवाद का विकास...................212

13.2 बंगाल का विभाजन................................214

13.2.1 विभाजन का आधिकारिक कारण.......215

13.2.2 विभाजन के पीछे का वास्तविक उद्देश्य 215

13.2.3 विभाजन विरोधी आंदोलन..................216

13.2.4 लोगों पर विभाजन का प्रभाव............216

13.2.5 विभाजन विरोधी अभियान.................216

13.2.6 स्वदेशी आंदोलन की विशेषताएँ.........217

13.2.7 स्वदेशी आंदोलन का विस्तार............218

13.2.8 स्वदेशी आंदोलन के चरण:...............220

13.2.9 विभाजन की घोषणा..........................220

13.2.10 स्वदेशी आंदोलन का मूल्यांकन..........221

14. कांग्रेस में विभाजन और क्रांतिकारी उग्र राष्ट्रवाद का उदय.. 222

14.1 सूरत विभाजन (1907)........................223

14.1.1 सूरत विभाजन के पश्चात..................224

14.2 1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधार:..................225

14.2.1 प्रथम चरण (1907-1917).............227

14.2.2 भारत में क्रांतिकारी गतिविधियाँ..........228

14.2.3 विदेशों में क्रांतिकारी गतिविधियाँ........230

14.2.4 षड्यंत्र...231

14.2.5 क्रांतिकारी गतिविधियों के पतन के कारण 232

15. प्रथम विश्व युद्ध और भारतीय राष्ट्रवाद 234

15.1 भारतीय राष्ट्रवाद पर विश्व युद्ध का प्रभाव 235

15.1.1 प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय सैनिकों पर प्रभाव...235

15.1.2 भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर प्रभाव....236

15.1.3 प्रथम विश्व युद्ध के दौरान या उसके तुरंत बाद ब्रिटिश शासन का दृष्टिकोण 236

15.2 प्रथम विश्व युद्ध के दौरान क्रांतिकारी गतिविधियाँ 237

15.2.1 उत्तरी अमेरिका: गदर आंदोलन 237

15.2.2 यूरोप- बर्लिन समिति........................239

15.2.3 सिंगापुर 239

16. होमरूल लीग आन्दोलन................................ 240

16.1 आंदोलन की पृष्ठभूमि...........................241

16.1.1 दो अलग-अलग लीग की स्थापना.....241

16.1.2 होम रूल लीग का उद्देश्य.................242

16.2 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन (1916)..............................244

16.2.1 लखनऊ सत्र में महत्वपूर्ण घटनाक्रम...244

16.2.2 समझौते की प्रकृति 245

16.2.3 लखनऊ समझौते की कमियाँ............245

16.3 मोंटेग्यू या अगस्त 1917 की घोषणा 245

16.3.1 1917 के मोंटेग्यू घोषणा का महत्व...246

16.4 मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार (भारत सरकार अधिनियम, 1919).......246

16.4.1 सुधारों का आलोचनात्मक मूल्याँकन...247

17. गाँधी जी का आगमन................................... 249

17.1 दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी के शुरुआती अनुभव 250

17.1.1 दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारतीय.....250

17.1.2 गाँधी जी का आगमन और संघर्ष का उदारवादी चरण (1894-1906)........251

17.2 निष्क्रिय प्रतिरोध या सत्याग्रह का चरण (1906-1914)....................................252
17.2.1 पंजीकरण प्रमाणपत्रों के विरुद्ध सत्याग्रह (1906)..252
17.2.2 भारतीय प्रवासन पर प्रतिबंध के खिलाफ आंदोलन..253
17.2.3 पोल टैक्स के खिलाफ आंदोलन........254
17.2.4 भारतीय विवाहों की अमान्यता के खिलाफ आंदोलन.............................254
17.2.5 दक्षिण अफ्रीका में गाँधीजी की उपलब्धियाँ......................................255
17.3 गाँधीजी की भारत वापसी......................255
17.3.1 भारत में गाँधीजी के प्रारंभिक आंदोलन 257
17.4 रॉलेट एक्ट 259
17.4.1 रॉलेट एक्ट की विशेषताएं.................260
17.4.2 इस अधिनियम का प्रभाव 260
17.5 जलियाँवाला बाग हत्याकांड, 13 अप्रैल, 1919..261
17.5.1 जलियाँवाला बाग हत्याकांड के परिणाम 262
17.5.2 हन्टर समिति द्वारा जाँच....................262
18. असहयोग आंदोलन और खिलाफत आंदोलन (1919-22).. 265
18.1 असहयोग का नेतृत्व करने वाली घटनाएँ (खिलाफत आंदोलन)...........................266
18.1.1 प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव..............266
18.1.2 रोलेट एक्ट, 1919...........................267
18.1.3 जलियाँवाला बाग नरसंहार.................267
18.1.4 मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार....................267
18.2 खिलाफत का मुद्दा................................267
18.2.1 खिलाफत-असहयोग कार्यक्रम का विकास 268
18.2.2 खिलाफत के प्रश्न पर कांग्रेस का दृष्टिकोण 268
18.2.3 कांग्रेस को मुस्लिम लीग का समर्थन.269
18.3 असहयोग-खिलाफत आंदोलन की शुरूआत 269
18.3.1 कलकत्ता से नागपुर अधिवेशन तक....269
18.3.2 कांग्रेस के असहयोग कार्यक्रम के समर्थन के बाद विभिन्न वर्गों की प्रतिक्रिया...270
18.4 असहयोग आंदोलन के मुख्य चरण.........270
18.4.1 आंदोलन की दिशा..........................270
18.4.2 आंदोलन के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया.271
18.4.3 आंदोलन का प्रसार: स्थानीय बदलाव.271
18.4.4 सरकार की प्रतिक्रिया.......................273
18.5 आंदोलन का अंतिम चरण.....................273
18.5.1 चौरी चौरा कांड और आंदोलन की वापसी 273
18.6 आन्दोलन को वापस लेने के कारण.......274
18.7 खिलाफत असहयोग आंदोलन का मूल्यांकन 275
19. कृषक आंदोलन और राष्ट्रवाद (1920-1929) 277
19.1 मोपला विद्रोह (1921).........................278
19.1.1 विद्रोह का प्रादुर्भाव.........................278
19.1.2 आंदोलन के कारण..........................278
19.1.3 परिणाम..279
19.2 बारदोली सत्याग्रह (1928)...................279
19.2.1 संकट का प्रादुर्भाव..........................279
19.2.2 वल्लभभाई पटेल का नेता के रूप में उद्भव...279
19.2.3 वल्लभभाई पटेल द्वारा अपनाए गए तरीके 280
19.2.4 राष्ट्रीय नेताओं का समर्थन................280
19.2.5 परिणाम..280
19.2.6 आंदोलन की खामियाँ.......................280
19.3 अवध किसान आंदोलन (यूपी)............280
19.3.1 आंदोलन का कारण 281
19.3.2 परिणाम..281

20. गुरुद्वारा सुधार और मंदिर प्रवेश के लिए संघर्ष 282

20.1 गुरुद्वारा सुधार 283

20.1.1 परिचय 283

20.1.2 अकाली आंदोलन की शुरुआत 283

20.1.3 एसजीपीसी के लिए अकाली की भूमिका और संघर्ष 284

20.2 मंदिर प्रवेश आंदोलन 284

20.2.1 परिचय 284

20.2.2 सत्याग्रह के लिए उत्साह बढ़ा 286

20.2.3 समझौता होना 286

20.2.4 केरल मंदिर प्रवेश 286

20.2.5 मंदिर के अधिकारियों और सत्याग्रहियों के बीच हाथापाई 286

20.2.6 सत्याग्रह का नया दौर शुरू हुआ 287

20.2.7 सत्याग्रह से नव परिवर्तन 287

20.2.8 आंदोलन का परिणाम 287

21. स्वराजवादी पार्टी, 1920 के दशक के दौरान नई ताकतों और क्रांतिकारी गतिविधियों का उदय 290

21.1 स्वराजवादी और अपरिवर्तनवादी 291

21.1.1 अपरिवर्तनवादी (नों-चेंजर्स) 291

21.2 कांग्रेस-खिलाफत स्वराज पार्टी का गठन 291

21.2.1 परिषद में प्रवेश के लिए स्वराजवादियों के तर्क 291

21.2.2 परिषद में प्रवेश से इंकार करने के लिए नों-चेंजर्स अर्थात अपरिवर्तनवादियों के तर्क 292

21.2.3 चुनावों के लिए स्वराजवादी घोषणा पत्र 292

21.2.4 स्वराजवादी पार्टी का कार्यक्रम 293

21.2.5 परिषदों में स्वराजवादी गतिविधि 293

21.3 नों-चेंजर्स (अपरिवर्तनवादियों) द्वारा किए गए रचनात्मक कार्य 294

21.3.1 अपरिवर्तनवादियों (नों-चेंजर्स) द्वारा किए गए रचनात्मक कार्यों की आलोचना ... 295

21.4 नई शक्तियों का उदय 300

21.4.1 मार्क्सवादी और समाजवादी विचारों का प्रसार 300

21.4.2 युवा राष्ट्रवादी: 300

21.4.3 समाजवादियों और साम्यवादियों से जुड़ी घटना 300

21.4.4 किसानों का आंदोलन 301

21.4.5 जाति/जातीय आंदोलन 301

21.5 1920 के दशक के दौरान क्रांतिकारी गतिविधियाँ 301

21.5.1 क्रांतिकारी गतिविधियाँ 302

21.5.2 क्रांतिकारियों के खिलाफ सरकार की कार्रवाई 303

21.5.3 बंगाल 303

22. साइमन कमीशन और नेहरू रिपोर्ट 310

22.5.1 भारतीय वैधानिक आयोग की नियुक्ति के कारण 311

22.5.2 आयोग का उद्देश्य 311

22.5.3 साइमन आयोग की सिफारिशें 311

22.5.4 प्रांतों में 311

22.5.5 केंद्र में 312

22.5.6 साइमन कमीशन के अन्य प्रावधान 312

22.1 साइमन कमीशन पर विभिन्न वर्गों के विचार 312

22.2 नेहरू रिपोर्ट (1928) 313

22.2.1 नेहरू रिपोर्ट की सिफारिशें 314

22.2.2 नेहरू रिपोर्ट और रियासतें 314

22.2.3 नेहरू रिपोर्ट और सांप्रदायिक दुविधा .. 315

22.2.4 जिन्ना के चौदह सूत्र (1929) 316

23. सविनय अवज्ञा आंदोलन और गोलमेज सम्मेलन 317

23.1 सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू होने से पहले महत्वपूर्ण घटनाक्रम 318

23.1.1 गाँधीजी की ग्यारह सूत्रीय माँगें 319

23.1.2 दांडी मार्च (12 मार्च-6 अप्रैल, 1930) 320
23.1.3 नमक कानून की अवज्ञा का प्रसार.....321
23.1.4 सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान अहिंसक विरोध................................322
23.1.5 सविनय अवज्ञा आंदोलन में लामबंदी के रूप...323
23.1.6 आंदोलन ने लामबंदी के कई नए रूपों को लोकप्रिय बनाया जैसे:................323
23.1.7 सविनय अवज्ञा आंदोलन में जन भागीदारी की सीमा..324
23.1.8 सरकार का रवैया.............................324
23.1.9 गाँधी-इरविन समझौता (1931).........325
23.1.10 समझौते की ओर ले जाने वाली घटनाएँ 325
23.2 कराची कांग्रेस अधिवेशन-1931.............326
23.3 गोलमेज सम्मेलन 327
23.3.1 पहला गोलमेज सम्मेलन....................327
23.3.2 दुसरा गोलमेज सम्मेलन.....................327
23.3.3 तीसरा गोलमेज सम्मेलन....................329
23.4 सांप्रदायिक पंचाट (1932)...................330
23.4.1 साम्प्रदायिक पंचाट का क्या कारण है? 330
23.4.2 सांप्रदायिक पंचाट के मुख्य प्रावधान...330
23.4.3 सांप्रदायिक पंचाट पर विचार..............331
23.4.4 सुलह और पूना समझौता...................331
23.4.5 पूना समझौता का महत्व....................331
23.5 भारत शासन अधिनियम, 1935.............332
23.5.1 निष्कर्ष..334
24. वामपंथ का उदय 337
24.1 वामपंथी समूहों के उदय के पीछे कारक.338
24.2 कांग्रेस में वामपंथ 339
24.2.1 वामपंथी दल का गठन......................339
24.2.2 वामपंथ का लक्ष्य 339
24.2.3 कांग्रेस समाजवाद.............................339
24.3 साम्यवादी आंदोलन................................340
24.3.1 भारत में साम्यवादी आंदोलन के चरण341
24.3.2 प्रथम चरण (1920-1928).............341
24.3.3 दूसरा चरण (1929-34).................342
24.3.4 तीसरा चरण (1934-1940)............342
24.3.5 चौथा चरण (1941-47).................343
24.4 विशिष्ट साम्यवाद मॉडल की विफलता के कारण...343
25. सविनय अवज्ञा आंदोलन के बाद के भविष्य की रणनीति पर वाद-विवाद.............................. 345
25.1 प्रथम चरण की बहस............................346
25.1.1 नेहरू द्वारा एक नए दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व 347
25.1.2 कांग्रेस के नेतृत्व द्वारा अपनाई गई रणनीतियाँ..349
25.1.3 विभाजित कांग्रेस के लिए ब्रिटिश नीति 350
25.2 दूसरे चरण की बहस............................350
25.2.1 कार्यालय स्वीकृति पर विभाजित राय..351
26. प्रांतों में कांग्रेस का शासन........................... 354
26.1 कांग्रेस के चुनावी घोषणा पत्र की विशेषताएं 355
26.2 1937 का चुनाव...................................355
26.3 1937 के चुनावों में कांग्रेस का प्रदर्शन..356
26.3.1 प्रांतों में कांग्रेस मंत्रालयों का गठन.....356
27. 1930 और 40 के दशक में किसान आंदोलन 361
27.3.1 सविनय अवज्ञा आंदोलन और किसान आंदोलन...362
27.3.2 सविनय अवज्ञा आंदोलन का किसान आंदोलन में योगदान.........................363
27.1 किसान आंदोलन (1940 के दशक में).369
27.1.1 पृष्ठभूमि...369
27.1.2 तेभागा आंदोलन (1946).................370

27.1.3 तेलंगाना आंदोलन 1946-1948..........371

27.2 अखिल भारतीय किसान सभा के सम्मेलन 372

28. भारतीय रियासतों में स्वतंत्रता संग्राम............. 373

28.1 रियासतों की स्थिति................................375

28.2 राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव....................375

28.2.1 रियासतों में राजनीतिक लामबंदी.........375

28.2.2 ऑल इंडिया स्टेट्स पीपल्स कांफ्रेंस (एआईएसपीसी)..............................376

28.2.3 रियासतों में उत्तरदायी लोकतांत्रिक सरकार की माँग...376

28.3 रियासतों के प्रति कांग्रेस की नीति..........377

28.3.1 अहस्तक्षेप की नीति..........................377

28.3.2 कांग्रेस की नीति में बदलाव.............378

28.4 एकीकरण की प्रक्रिया............................379

28.4.1 राजकोट में संघर्ष.............................379

28.4.2 हैदराबाद में संघर्ष............................382

28.5 रियासतों में संघर्ष का मूल्यांकन.............386

29. द्वितीय विश्व युद्ध एवं राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया ... 388

29.1 संघर्ष के तरीके पर कांग्रेस का संकट.....389

29.1.1 जन संघर्ष शुरू करने पर गाँधीजी के विचार...389

29.1.2 हरिपुरा अधिवेशन (1938)..............389

29.1.3 त्रिपुरी अधिवेशन (1939)...............390

29.1.4 त्रिपुरी अधिवेशन के पश्चात.............392

29.2 द्वितीय विश्व युद्ध..................................392

29.2.1 भारतीय राष्ट्रवादी और ब्रिटिश प्रशासन की प्रतिक्रिया...................................392

29.2.2 रामगढ़ अधिवेशन (मार्च 1940).......394

29.3 अगस्त प्रस्ताव (1940).........................395

29.3.1 अगस्त प्रस्ताव के प्रमुख बिंदु...........395

29.3.2 अगस्त प्रस्ताव के लिए प्रतिक्रियाएँ....395

29.4 व्यक्तिगत सत्याग्रह.................................395

29.4.1 व्यक्तिगत सत्याग्रह के उद्देश्य............396

29.4.2 व्यक्तिगत सत्याग्रह की विधि.............396

29.4.3 सत्याग्रह का प्रारंभ और अंत.............396

29.5 क्रिप्स मिशन (मार्च 1942)..................397

29.5.1 क्रिप्स मिशन के आगमन के कारण...397

29.5.2 क्रिप्स मिशन के प्रमुख प्रस्ताव 397

29.5.3 क्रिप्स प्रस्तावों पर प्रतिक्रियाएँ...........398

29.5.4 क्रिप्स मिशन की असफलता के कारण...398

30. भारत छोड़ो आंदोलन, आईएनए और युद्ध के बाद का राष्ट्रीय परिदृश्य............................ 401

30.1 वर्धा में कांग्रेस अधिवेशन.......................402

30.2 भारत छोड़ो प्रस्ताव 402

30.3 भारत छोड़ो आंदोलन............................403

30.3.1 आंदोलन का प्रसार...........................403

30.3.2 आंदोलन की प्रतिक्रिया एवं प्रवृत्ति.....405

30.3.3 सरकारी दमन..................................405

30.3.4 गाँधी का कारावास से मुक्त होना.......406

30.4 राजाजी सूत्रका प्रस्ताव और वेवेल योजना 406

30.4.1 देसाई-लियाकत समझौता..................408

30.4.2 वेवेल योजना: शिमला सम्मेलन..........408

30.5 आजाद हिंद फौज (इंडियन नेशनल आर्मी) 409

30.5.1 प्रथम चरण- आईएनए की नींव.........409

30.5.2 सुभाष चंद्र बोस और आई.एन.ए........410

30.6 युद्ध के बाद का राष्ट्रीय परिदृश्य..........411

30.6.1 ब्रिटेन में सत्ता परिवर्तन.....................411

30.6.2 केंद्र और प्रांतों में चुनाव..................412

30.6.3 आईएनए पर मुकदमा.......................413

30.7 कैबिनेट मिशन (मार्च 1946)................416

30.7.1 कैबिनेट मिशन योजना के प्रमुख प्रावधान 417

30.7.2 प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस.......................421

30.8 अंतरिम सरकार 421
30.9 संविधान सभा 422
30.9.1 संविधान सभा में संकट....................423

31. स्वतंत्रता और विभाजन 425
31.1 एटली की घोषणा 426
31.1.1 एटली की घोषणा की प्रमुख बातें......426
31.1.2 कांग्रेस और मुस्लिम लीग का मत.....426
31.2 माउंटबेटन योजना (3 जून, 1947).......427
31.2.1 इस योजना की प्रमुख बातें...............427
31.2.2 माउंटबेटन की योजना का कार्यान्वयन 429
31.3 कांग्रेस और विभाजन 429
31.4 रियासतों का एकीकरण.........................430
31.5 विभाजन से हुए नरसंहार 431
31.6 1909 से 1947 तक विभाजन की ओर ले जाने वाली महत्वपूर्ण घटनाएँ.................431
31.7 भारत में सांप्रदायिकता का उद्भव एवं प्रसार 432
31.8 द्वि-राष्ट्र सिद्धांत (टू-नेशन थ्योरी) का विकास 435

32. संवैधानिक, प्रशासनिक और न्यायिक विकास 439
32.1 ताज का शासन (1858-1947)...........440
32.1.1 भारत सरकार अधिनियम, 1858........440
32.1.2 भारतीय परिषद अधिनियम, 1861......440
32.1.3 भारतीय परिषद अधिनियम, 1892......441
32.1.4 भारतीय परिषद अधिनियम, 1909 (मॉर्ले-मिंटो सुधार).........................442
32.1.5 भारत सरकार अधिनियम, 1919 (मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार)...............443
32.1.6 अधिनियम से संबंधित मुद्दे................444
32.1.7 साइमन कमीशन...............................445
32.1.8 सांप्रदायिक पंचाट 446
32.1.9 भारत सरकार अधिनियम, 1935........446
32.1.10 कैबिनेट मिशन योजना (1946)........448
32.2 भारत में सिविल सेवाओं का विकास.....449
32.2.1 ईस्ट इंडिया कंपनी के तहत सिविल सेवा 449
32.2.2 भारत शासन अधिनियम, 1919 और भारत सरकार अधिनियम, 1935 के तहत सिविल सेवा....................................452
32.3 ब्रिटिश भारत में न्यायपालिका का विकास 453
32.3.1 पूर्व-औपनिवेशिक युग में न्यायपालिका 453
32.3.2 अंग्रेजों के अधीन न्यायपालिका..........454
32.4 पुलिस व्यवस्था.......................................460
32.4.1 कार्नवालिस की भूमिका...................460
32.4.2 पुलिस प्रणाली में मेयो की भूमिका....460
32.4.3 पुलिस प्रणाली में बेंटिक की भूमिका.460
32.4.4 पुलिस आयोग (1860)...................460
32.4.5 भारतीय पुलिस अधिनियम, 1861......461
32.4.6 एंड्रयू फ्रेजर पुलिस आयोग (1902)..461

33. भारतीय प्रेस और शिक्षा का विकास........... 462
33.1 भारत में प्रेस का उद्भव.......................463
33.2 सेंसरशिप और विनियम.........................463
33.3 राष्ट्रवाद और भारतीय प्रेस....................464
33.3.1 समाचार पत्र और उसके प्रकाशक......465
33.3.2 समाचार पत्र क्षेत्रवार.........................465
33.3.3 वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट, 1878..............466
33.3.4 अधिनियम का प्रभाव.......................466
33.4 उत्तरवर्ती विनियमन................................467
33.4.1 भारतीय प्रेस (आपातकालीन शक्तियां) अधिनियम, 1931............................467
33.5 प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध एवं प्रेस ..467
33.5.1 भारतीय प्रेस का प्रभाव 468
33.6 ब्रिटिश भारत में शैक्षिक विकास...........470
33.6.1 चार्टर अधिनियम, 1813 470
33.6.2 मैकाले स्मरण-पत्र (मिनट)..............472

33.6.3 वुड्स डिस्पैच ऑन एजुकेशन, 1854.473
33.6.4 थॉमसन के प्रयास.............................475
33.7 ताज-शासन के तहत शैक्षिक विकास......475
33.7.1 द हंटर कमीशन (1882).................476
33.7.2 भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 1904 476
33.7.3 भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 1904 477
33.7.4 शिक्षा नीति 1913 पर सरकार का संकल्प 477
33.7.5 सैडलर विश्वविद्यालय आयोग (1917-19)....................................477
33.7.6 हार्टोग समिति, 1929........................478
33.7.7 भारत सरकार अधिनियम, 1935........479
33.7.8 सार्जेंट शिक्षा योजना (1944)...........479

34. श्रमिक वर्ग और राष्ट्रीय आंदोलन................ 483
34.1 आधुनिक उद्योगों और श्रमिक वर्ग का विकास..484
34.1.1 चाय कंपनी की स्थापना 484
34.1.2 भारतीय रेलवे का विकास.................484
34.1.3 भारत में कपास और जूट मिलों का विकास...484
34.1.4 श्रमिक वर्ग का विकास.....................485
34.2 श्रमिक-दशाएँ..485
34.2.1 पारिश्रमिक स्थिति.............................486
34.3 प्रारंभिक चरण में राष्ट्रवादी एवं श्रमिक.486

35. विविध 494
35.1 स्वतंत्रता सेनानी और उनका योगदान......495
35.2 भारत के गवर्नर-जनरल और वायसराय..500
35.3 भारत के गवर्नर-जनरलों और वायसराय से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाएँ......................501
35.4 महत्वपूर्ण कांग्रेस अधिवेशन....................509
35.5 समाचार पत्र और पत्रिकाएँ......................517
35.6 महत्वपूर्ण पुस्तकें.....................................520
35.7 ब्रिटिश भारत के दौरान प्रसिद्ध महिला व्यक्तित्व..522
35.8 यूरोपियों के मध्यसत्ता का संघर्ष............525

प्रतिदर्श पेज

शाह जफर के गुरु) सम्मिलित थे। इनके कुछ उल्लेखनीय कार्यों को कुल्लियात-ए-जफर में संकलित किया गया था।

मुगल साम्राज्य के पतन के कारण

बाबर द्वारा स्थापित शक्तिशाली मुगल साम्राज्य एक सदी से भी अधिक समय तक फलता-फूलता रहा, लेकिन सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान तनाव और तनाव के तत्व मुगल साम्राज्य की संरचना में दिखाई देने लगे। यह अब मजबूत और प्रभावी नहीं रह गया था और अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक साम्राज्य केवल नाम का रह गया था।

औरंगजेब की भूमिका

मुगल साम्राज्य के पतन के बारे में सिद्धांत और विचार

औरंगजेब की भूमिका

सर जदुनाथ सरकार ने मुगल साम्राज्य के पतन के लिए औरंगजेब के शासनकाल की आलोचना की। औरंगजेब की धार्मिक और दक्कन की नीतियों ने साम्राज्य के पतन में योगदान दिया।

- **धार्मिक नीति:**
  - उसने राजपूतों को मुगल साम्राज्य की संरचना से अलग कर दिया।
  - वह कई मौकों पर अपने गैर-मुस्लिम विषयों/ भावनाओं की संवेदनशीलता का सम्मान करने में विफल रहा।
  - उसकी नीति के परिणामस्वरूप कई मंदिरों को नष्ट कर दिया गया और जजिया को फिर से लागू कर दिया गया।
  - इसने हिंदुओं को अलग-थलग कर दिया और उन लोगों को परोक्ष रूप से सशक्त बनाया जो राजनीतिक या अन्य कारणों से मुगल साम्राज्य के विरोधी थे।
- **दक्कन नीति:**
  - गोलकुंडा, बीजापुर और कर्नाटक पर मुगल सरकार के नियंत्रण को बढ़ाने के प्रयास ने मुगल प्रशासन को चरम सीमा पर पहुँचा दिया।
  - इसने मुगल सीमा रेखा को मराठा आक्रमण हेतु प्रेरित किया, जिससे क्षेत्र में मुगल अमीरों हेतु सौंपी गई जागीरों से बकाया वसूल करना मुश्किल हो गया और उन्हें मराठों के साथ गुप्त समझौते करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

कृषि संकट

डॉ. इरफान हबीब के अनुसार 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में देखा गया कृषि संकट मुगल साम्राज्य के पतन के लिए जिम्मेदार था।

> औरंगजेब की दक्कन नीति मराठों के बढ़ते प्रभाव, गोलकुंडा और बीजापुर जैसे दक्कन के शिया राज्यों के विद्रोही रवैये और अपने बेटे अकबर की विद्रोही गतिविधियों को नियंत्रित करने की नीति से प्रेरित थी, जिसने दक्कन में शरण ली थी। औरंगजेब 1682 में दक्कन आया और 1707 में अपनी मृत्यु तक दक्कन में रहा।

© Study IQ Publications

पिछले वर्षों के प्रश्न

प्र. निम्नलिखित में से कौन सा कथन उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के दौरान भारत पर औद्योगिक क्रांति के प्रभाव की सही व्याख्या करता है? (यूपीएससी 2020)

a) भारतीय हस्तशिल्प बर्बाद हो गए थे।
b) भारतीय कपड़ा उद्योग में बड़ी संख्या में मशीनें पेश की गई।
c) देश के कई हिस्सों में रेलवे लाइनें बिछाई गई।
d) ब्रिटिश निर्माताओं के आयात पर भारी शुल्क लगाए गए थे।

उत्तरः a)

प्र. '1813 के चार्टर अधिनियम' के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

(1) इसने चाय के व्यापार और चीन के साथ व्यापार को छोड़कर भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापार एकाधिकार को समाप्त कर दिया।
(2) इसने कंपनी के कब्जे वाले भारतीय क्षेत्रों पर ब्रिटिश क्राउन (तख्त) की संप्रभुता पर जोर दिया।
(3) भारत के राजस्व अब ब्रिटिश संसद द्वारा नियंत्रित थे।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/ से सही हैं? (यूपीएससी 2019)

a) केवल 1 और 2 b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3 d) 1, 2 और 3

उत्तरः **a)**

प्र. आर्थिक रूप से, 19वीं शताब्दी में भारत में ब्रिटिश शासन के परिणामों में से एक था: (यूपीएससी 2018)

a) भारतीय हस्तशिल्प के निर्यात में वृद्धि
b) भारतीय स्वामित्व वाले कारखानों की संख्या में वृद्धि
c) भारतीय कृषि का व्यावसायीकरण
d) शहरी आबादी में तेजी से वृद्धि

उत्तरः c)

प्र. निम्नलिखित में से कौन ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में रैयतवारी बंदोबस्त की शुरुआत से जुड़ा था/थे?

(1) लॉर्ड कार्नवालिस
(2 अलेक्जेंडर रीड
(3) थॉमस मुनरो

नीचे दिए गए कोड का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए: (यूपीएससी 2017)

a) केवल 1 b) केवल 1 और 3
c) केवल 2 और 3 d) 1, 2 और 3

उत्तरः c)

प्र. निम्नलिखित में से कौन भारत में उपनिवेशवाद का/के आर्थिक आलोचक था/थे?

(1) दादाभाई नौरोजी
(2) जी सुब्रमण्यम अय्यर
(3) आर सी दत्त

नीचे दिए गए कोड का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए: (यूपीएससी 2015)

a) केवल 1 b) केवल 1 और 2
c) केवल 2 और 3 d) 1, 2 और 3

उत्तरः d)

© Study IQ Publications

परिचय

प्रथम विश्व युद्ध के बाद, भारत के अलावा एशिया और अफ्रीका के कई अन्य उपनिवेशों में राष्ट्रवादी गतिविधियों का पुनरुत्थान हुआ। राजनीतिक परिदृश्य में **मोहनदास करमचंद गाँधी** के आने से ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ भारत के आंदोलन को बढ़ावा मिला।

गाँधी जी के बारे में

मोहनदास करमचंद गाँधी / एम.के. गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात राज्य के पोरबंदर में हुआ था। उन्होंने ग्रेट ब्रिटेन में अपनी कानूनी शिक्षा पूरी की और एक महत्वाकांक्षी बैरिस्टर के रूप में कानूनी पेशे के लिए दक्षिण अफ्रीका चले गए। गाँधी जी हमेशा न्याय की उच्च भावना से प्रेरित थे और इस प्रकार दक्षिण अफ्रीकी उपनिवेशों में रहने वाले भारतीयों के साथ होने वाले अन्याय, भेदभाव और अपमान से बहुत आहत थे। वर्ष 1893 के आसपास, जब वे मात्र 24 वर्ष के थे, उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में नस्लीय भेदभाव के शिकार हो रहे भारतीयों के हितों के लिए संघर्ष की शुरुआत की। गाँधी जी के दृष्टिकोण का एक और पहलू यह था कि वे विचार और व्यवहार, विश्वास और कृत्यों में विभेद नहीं करते थे।

दक्षिण अफ्रीका में युवास्था में गाँधी जी, 1909।

दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी के शुरुआती अनुभव

गाँधी जी अपने मुवक्किल दादा अब्दुल्ला से जुड़े एक मामले के सिलसिले में 1898 में दक्षिण अफ्रीका पहुँचे। दक्षिण अफ्रीका में, उन्होंने श्वेत नस्लवाद का विद्रूप चेहरा और एशियाई श्रमिकों के अपमान को देखा। गाँधी जी ने भारतीय श्रमिकों को उनके अधिकारों के लिए लड़ने में सक्षम बनाने के लिए दक्षिण अफ्रीका में रहने का फैसला किया। वे 1914 तक वहीं रहे जिसके बाद वे भारत लौट आए।

दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारतीय

दक्षिण अफ्रीका के लिए भारतीय आप्रवासन 1890 तक शुरू हो गया था, जब दक्षिण अफ्रीका के श्वेत निवासियों ने चीनी बागानों पर काम करने के लिए मुख्य रूप से भारत के दक्षिण से गिरमिटिया भारतीय श्रमिकों की भर्ती की थी। इन व्यवसायों के प्रबंधन की खोज में, कई भारतीय व्यापारी सामने आए, जिनमें से अधिकांश मेमन मुस्लिम समुदाय के थे। भारतीयों के अन्य समूह, जो दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी के आगमन से पहले मौजूद थे, वे पूर्व अनुबंधित श्रमिक थे, जो अपने अनुबंधों की समाप्ति के बाद दक्षिण अफ्रीका में बस गए थे और उनके बच्चे दक्षिण अफ्रीका में पैदा हुए और पले-बढ़े थे। भारतीयों के इन समूहों में से किसी की भी अच्छी शिक्षा या यहाँ तक कि अंग्रेजी भाषा के कामकाजी ज्ञान तक पहुँच नहीं थी, हालाँकि धनी व्यापारियों को केवल अंग्रेजी शब्दों का ज्ञान था, जो उन्हें व्यापार सौदे करने में मदद करते थे। संक्षेप में, हम दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों को तीन श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं :

- **अनुबंधित भारतीय श्रमिक :** मुख्य रूप से दक्षिण भारत से, जो 1890 के बाद चीनी बागानों में काम करने के लिए दक्षिण अफ्रीका चले गए थे;
- **व्यापारी :** अधिकतर मेमन मुसलमान जो मजदूरों के अनुसरण में चले थे;

© Study IQ Publications

आयोजित बैठकों में अधिक समर्थन से इस पहल का स्वागत किया गया।

- हैदराबाद के मजदूर और छात्र हड़ताल पर चले गए।
- सरकार ने दमन तेज कर दिया। मारपीट और गिरफ्तारियाँ हुई।
- 13 अगस्त, को निजाम ने भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को औपचारिक रूप से फहराने पर प्रतिबंध लगा दिया।
- 15 अगस्त 1947 यानी स्वतंत्रता दिवस को स्वामी रामानन्द तीर्थ और उनके साथियों को गिरफ्तार कर लिया गया।
- कुछ नेताओं की गिरफ्तारी के बावजूद राज्य की जनता ने आंदोलन को जारी रखा।
- हैदराबाद के छात्रों द्वारा सुल्तान बाजार में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया।
- राष्ट्रीय झंडों से सजी ट्रेनें पड़ोसी भारतीय क्षेत्रों से हैदराबाद में भाप से चली।
- महिला दल का नेतृत्व बृज रानी और यशोदा बेन ने किया।
- निजाम और उनके प्रशासन ने आंदोलन पर जमकर नकेल कसी।
- निजाम ने इत्तिहाद उल मुस्लिमीन के रजाकारों को विरोध कर रहे लोगों पर हमला करने के लिए अर्धसैनिक बल के रूप में काम करने का अधिकार दिया था।
- इन रजाकारों ने विरोध करने वाली जनता पर सशस्त्र धावा बोल दिया।
- 29 नवंबर, 1947 को निजाम ने भारत सरकार के साथ एक स्टैंडस्टिल समझौते यानी ठहराव समझौता पर हस्ताक्षर किए। हालाँकि, दमन अभी भी तेज था और रजाकार का खतरा काफी अधिक हो गया था।

सशस्त्र विरोध और भारतीय सेना का हस्तक्षेप

- आंदोलन ने अब एक अलग रूप धारण कर लिया, यह एक सशस्त्र विरोध था। राज्य कांग्रेस ने राज्य की सीमाओं पर शिविर स्थापित किए, और कस्टम की चौकियों, पुलिस स्टेशनों और रजाकार शिविरों पर छापे मारे। लेकिन राज्य के भीतर, और विशेष रूप से तेलंगाना के नलगोंडा, वारंगल और खम्मम जिलों में, कम्युनिस्टों ने सशस्त्र विरोध को संगठित करने का बीड़ा उठाया।
- उन्होंने किसानों को दलों में संगठित किया और रजाकारों पर हमला करने के लिए हथियारों का इस्तेमाल करने का प्रशिक्षण दिया।
- अगला चरण तब शुरू हुआ जब भारतीय सेना ने 13 सितंबर, 1948 को हैदराबाद पर हमला किया, निजाम ने आत्मसमर्पण किया और राज्य को भारतीय संघ के साथ एकीकृत किया गया।
- भारतीय सेना का किसानों समेत लोगों ने मुक्ति सेना के रूप में स्वागत किया। यहाँ काफी उल्लास था और राष्ट्रीय ध्वज को बड़े आनंद और स्वतंत्रता की भावना के साथ फहराया गया था।

रियासतों में संघर्ष का मूल्यांकन

- हैदराबाद और राजकोट के मामले के अध्ययन से पता चलता है कि बड़े पैमाने पर सविनय अवज्ञा या सत्याग्रह जैसे राजनीतिक साधनों, जिन्होंने ब्रिटिश भारत में बड़े परिणाम प्रदर्शित किए, रियासतों में समान प्रभावशीलता या व्यवहार्यता नहीं प्रदर्शित कर सके।
- नागरिक स्वतंत्रता के अभाव या प्रतिनिधि संस्थाओं की कमी को देखते हुए वर्चस्ववादी राजनीति के लिए राजनीतिक स्थान बहुत छोटा था।
- इसके अलावा, ब्रिटिश सरकार द्वारा इन रियासतों को प्रदान की गई अंतिम सुरक्षा ने शासकों को लोगों के विरोध का सामना करने में सक्षम बनाया।
- जिसके परिणामस्वरूप, रियासतों के शासकों में असंवैधानिक साधनों का सहारा लेने और सार्वजनिक आंदोलनों पर हमले के हिंसक तरीकों का सहारा लेने की प्रवृत्ति अधिक थी।

प्रथम संस्करण

भारत की
कला एवं संस्कृति

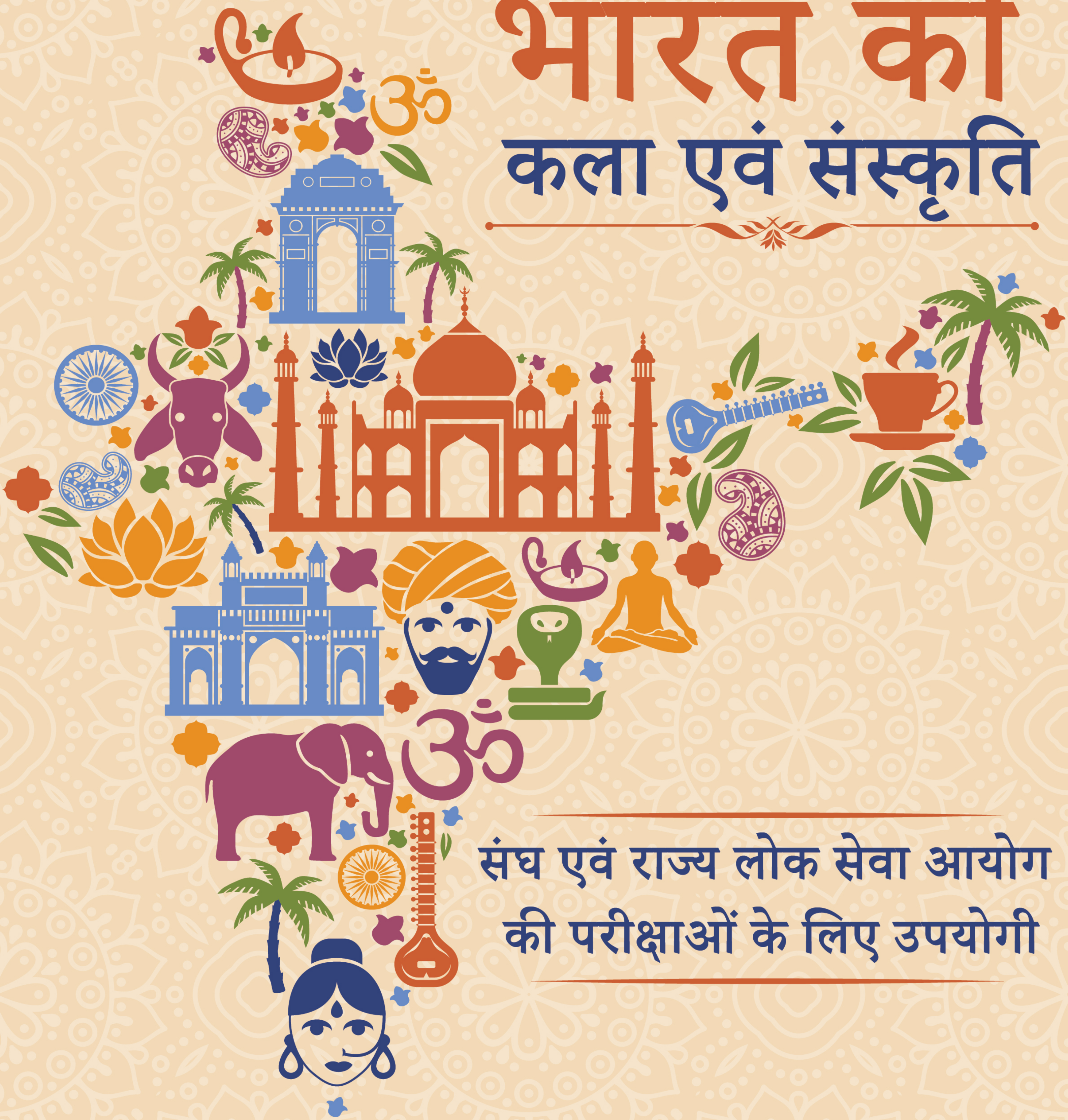

संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग
की परीक्षाओं के लिए उपयोगी

संस्थापक की कलम से

प्रिय साथियों,

हमारी पिछली किताबों (भारत का भूगोल, भूगोल तथ्य एवं सिद्धांत, भारत की राजव्यवस्था तथा आधुनिक भारत का इतिहास) को मिली शानदार प्रतिक्रियाओं के लिए हम आपको विनम्रतापूर्वक धन्यवाद देना चाहते हैं। हमारी किताबें लॉन्च होने के बाद से ही यूपीएससी सेगमेंट में अमेजन और फ्लिपकार्ट के लिए बेस्ट सेलर लिस्ट में हैं।

संघ लोकसेवा आयोग के लिए सर्वोत्कृष्ट, हमारी पूर्व की किताबों को मिली भारी सकारात्मक प्रतिक्रिया से प्रेरणा लेते हुए, हम सभी छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लोकतंत्रीकरण करने के अपने मिशन की दिशा में एक और कदम आगे बढा लगा रहे हैं। स्टडी आईक्यू पब्लिकेशन आपको हमारी पुस्तक 'भारत की कला एवं संस्कृति' का पहला संस्करण प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहा है।

यह पुस्तक उन चिंताओं और चुनौतियों को ध्यान में रखकर बनाई गई है, जिनका सामना छात्रों को सिविल सेवा की तैयारी के दौरान करना पड़ता है। छात्र अक्सर भ्रमित होते हैं कि क्या अध्ययन करना है, कितना अध्ययन करना है, किसी विषय के लिए आवश्यक ज्ञान की गहराई और आयोग द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों के प्रकार। इन सबसे ऊपर, समेकित अध्ययन सामग्री की अनुपस्थिति और कई स्रोतों से सूचना हमारे छात्रों की तैयारी में बाधा डालती है।

यह पुस्तक इन समस्याओं से निपटने और छात्रों के ज्ञान के आधार में सुधार करने, उनकी तैयारी के दौरान उनके कीमती समय की बचत करने और उनके सामने आने वाली कई शैक्षणिक गलतफहमियों को दूर करने का एक ईमानदार प्रयास है।

इस पुस्तक की प्रमुख विशेषताएंः

- इस पुस्तक का उद्देश्य यूपीएससी की वर्तमान प्रवृत्तियों और पैटर्न के आधार पर आपकी तैयारी को केंद्रित और प्रासंगिक, पुनरीक्षण-अनुकूल और अप-टू-डेट बनाना है।
- यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की आवश्यकताएं इस पुस्तक का विशेष फोकस हैं।
- हमने यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत सावधानी बरती है कि सामग्री स्पष्ट और आसानी से समझ में आने वाली हो, ताकि छात्र अपने लाभ के लिए अवधारणाओं को सीख सकें और याद कर सकें।
- जहां भी आवश्यक हो, हमने छात्रों को मुख्य परीक्षा से जुड़ी सभी मौलिक अवधारणाओं को समझने में मदद करने के लिए प्रासंगिक उदाहरण, ऐतिहासिक मामले और तालिकाओं को शामिल किया है।
- पूरी इमानदारी के साथ आपको, आपकी सिविल सेवा परीक्षा की, स्टडी आईक्यू टीम तैयारी में सर्वश्रेष्ठ होने की कामना करती है, और हमें उम्मीद है कि यह पुस्तक आपकी इस अश्वमेध यात्रा में आपकी सहायता अवश्य करेगी।

Happy Learning!!

Mohit Jindal, IIT-Bombay
Co-Founder, Study IQ Education,
Mentoring UPSC CSE Aspirants for past 7 years

विषय सूची विस्तृत

1. भारतीय वास्तुकला 1
   - 1.1 भारतीय वास्तुकला के अध्ययन का महत्व 1
   - 1.2 भारतीय वास्तुकला के चरण 1
     - प्राचीन काल (2500 ई.पू.-1200 ईस्वी) 1
     - मध्यकाल (1200 ईस्वी - 1757 ईस्वी) 2
     - आधुनिक काल (1757 ईस्वी- अद्यतन) 2
   - 1.3 प्राचीन काल 2
   - 1.4 सिंधु घाटी सभ्यता 2
   - 1.5 मौर्य वास्तुकला 6
     - स्तूप 6
     - स्तंभ 7
     - गुफा वास्तुकला 8
   - 1.6 मौर्योत्तर वास्तुकला 9
     - शैल-कृत (कर्तित) गुफाएँ 9
     - स्तूप 11
     - जैन वास्तुकला तथा बौद्ध वास्तुकला के मध्य प्रमुख अंतर 12
   - 1.7 मंदिर स्थापत्यकला 14
   - 1.8 मंदिर वास्तुकला का विकास 14
     - गुप्त काल 14
     - मंदिर वास्तुकला की विभिन्न शैलियाँ 16
     - नागर शैली 16
     - द्रविड़ शैली 20
     - वेसर शैली 21
   - 1.9 प्रारंभिक मध्ययुगीन हिंदू वास्तुकला 23
     - पाल और सेन वास्तुकला शैली 24
   - 1.10 भारत के बाहर के मंदिर 24
   - 1.11 मध्यकालीन वास्तुकला 25
     - गुलाम वंश 26
     - खिलजी राजवंश 27
     - तुगलक वंश 28
     - लोदी राजवंश 28
     - मुगल वास्तुकला 28
   - 1.12 प्रांतीय वास्तुकला शैलियाँ 32
     - मालवा शैली 32
     - जौनपुर शैली 33
     - बीजापुर या दक्कन शैली 33
     - बंगाल शैली 33
     - कश्मीरी शैली 34
     - विजयनगर वास्तुकला 34
   - 1.13 आधुनिक वास्तुकला 34
     - पुर्तगाली प्रभाव 34
     - फ्रांसीसी प्रभाव 35
     - ब्रिटिश प्रभाव 35
2. भारत में मूर्तिकला 39
   - 2.1 भारत में मूर्तिकला का विकास 39
     - प्राचीन काल 39
     - पूर्व मध्यकाल 50
     - मध्यकाल (1200 ई.- 1757 ई.) 51
     - आधुनिक काल (1857-1947 के बाद) 53
     - स्वतंत्रता के बाद (1947 के बाद) 53
   - 2.2 मृदभांडो का महत्व 54
3. मृदभांड 54
   - 3.1 मृदभांडो का विकास 55
     - नवपाषाण युग (10000 ईसा पूर्व) 55
     - ताम्र पाषाण युग (4500-2000 ईसा पूर्व) 55
     - हड़प्पा सभ्यता (3300-1500 ईसा पूर्व) 57
     - वैदिक युग (1500-500 ईसा पूर्व) 57
     - महापाषाणिक युग (300 ईसा पूर्व-100 सीई) 58
     - मौर्य काल (321 ईसा पूर्व-185 ईसा पूर्व) 58
     - कुषाण काल (100 सीई-400 सीई) 58
     - गुप्त काल (400 सीई-500 सीई) 59
     - तुर्क-मुगल और राजपूत काल (1200 सीई से आगे) 59
   - 3.2 आधुनिक भारत में पाए जाने वाले प्रमुख मृदभांडो की सूची 59
4. भारतीय चित्रकला 61
   - 4.1 भारत में प्राक्-ऐतिहासिक चित्रकारी 61
     - ऊपरी पुरापाषाण कालीन चित्रकला (40000-10000 ई.पू.) 61
     - मध्य पाषाण कालीन चित्रकला (10000-4000 ईसा पूर्व) 62
     - ताम्रपाषाण कालीन चित्रकला 62
   - 4.2 भारतीय चित्रकला का वर्गीकरण 63
     - भित्ति चित्रकला 63
     - बाघ गुफा चित्रकला 65

- लघु चित्रकला 68
- प्रारंभिक लघुचित्र 68
- अपभ्रंश चित्रकला शैली 69
- लघुचित्रों का संक्रमण काल 69
- दिल्ली सल्तनत के दौरान लघु चित्रकला 69
- मुगल युगीन लघु चित्रकारी 69

4.3 भारत में चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ 71

- राजस्थानी चित्रकला शैली 71
- मेवाड़ चित्रकला शैली 72
- मारवाड़ चित्रकला शैली 72
- हाड़ौती चित्रकला शैली 72
- ढूँढाड़ चित्रकला शैली 73
- किशनगढ़ चित्रकला शैली 73
- पहाड़ी चित्रकला शैली 73
- बशोली चित्रकला शैली 74
- कांगड़ा चित्रकला शैली 74
- रागमाला चित्रकला 74
- जम्मू या डोगरा चित्रकला शैली 75
- गुलेर चित्रकला शैली 75
- कुल्लू-मंडी चित्रकला शैली 75
- दक्षिण भारत की लघु चित्रकला 76
- मुगल, राजस्थानी, तंजौर, फारसी चित्रकलाओं का तुलनात्मक विश्लेषण 77

4.4 आधुनिक चित्रकला शैली 78

- कंपनी चित्रिकारी 78
- बाजार चित्रकला 78
- बंगाल चित्रकला शैली 79
- क्यूबिस्ट चित्रकला शैली 79
- प्रगतिशील कला समूह 80

4.5 लोक चित्रकला 80

5. भारतीय हस्तशिल्प 86

5.1 भारतीय हस्तशिल्प का वर्गीकरण 86

- कपड़ा हस्तशिल्प 86
- कढ़ाई शिल्प 87
- कांच के बने पदार्थ 91
- हाथीदांत नक्काशियों 91
- चाँदी के शिल्प 91
- कांस्य शिल्प 92
- काष्ठ शिल्प 93
- खिलौने 94
- पत्थर के पात्र 96
- फर्श डिजाइन और कालीन 96
- चर्म उत्पाद 96

5.2 भारतीय अर्थव्यवस्था में हस्तशिल्प की भूमिका 97

5.3 हस्तशिल्प क्षेत्र में चुनौतियां 97

6. भारतीय संगीत 100

6.1 भारत में संगीत का इतिहास 100

- प्राचीन भारत 100

6.2 प्राचीन ग्रंथों में संगीत का स्थान 100

6.3 भारतीय संगीत से संबंधित प्रमुख शब्दावली 101

- राग 101

6.4 राग में अन्य महत्वपूर्ण शब्दावली 101

- समय 102
- थाट 102
- रस 102
- ताल 102

6.5 भारतीय संगीत का वर्गीकरण 102

6.6 इसके प्रमुख घराने शामिल हैं- 104

6.7 अर्ध शास्त्रीय हिंदुस्तानी 104

- कर्नाटक संगीत 105

6.8 भारत में लोक संगीत 107

- शास्त्रीय और लोक संगीत का संगम 109

6.9 आधुनिक संगीत 110

6.10 वाद्ययंत्र 111

6.11 भारत में संगीत के विकास के लिए संस्थान 112

7. भारतीय नृत्य 114

7.1 भारत में नृत्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 114

7.2 शास्त्रीय नृत्य 114

- भरतनाट्यम 114
- कुचिपुड़ी 115
- कथकली 115
- मोहिनीअट्टम 116
- ओडिसी 116
- मणिपुरी 117
- सत्रिया नृत्य 118

7.3 लोक नृत्य 119

7.4 मणिपुरी संकीर्तन 120

8. भारतीय रंगमंच का विकास 122

8.1 परिचय 122

8.2 नाट्य रूप की उत्पत्ति 122

8.3 रंगमंच का विभाजन 122

8.4 शास्त्रीय/प्राचीन संस्कृत रंगमंच 123

- प्रमुख नाटककार तथा उनकी रचनाएँ 123

- शास्त्रीय संस्कृत नाटकों की विशेषताएँ 123
- संस्कृत रंगमंच के पतन के कारण 124
- आनुष्ठानिक रंगमंच रूप 125
- मनोरंजन रंगमंच रूप 126
- दक्षिण भारत के रंगमंच 129

8.5 आधुनिक रंगमंच का विकास 131
- आधुनिक रंगमंच पर स्वतंत्रता संग्राम का प्रभाव 132

8.6 निष्कर्ष 132

9. भारत की पुतली कला 134

9.1 भारत में पुतली कला की उत्पत्ति 134

9.2 भारत में पुतली कला के प्रकार 134
- स्ट्रिंग/धागा पुतली 135
- छाया पुतली 137
- दस्ताना पुतली 138
- रॉड /छड़पुतली कला 139
- आदिवासी कठपुतली कला 140

9.3 पुतली कला के पतन के कारण 140

10. भारतीय सर्कस 142

10.1 भारत में प्रमुख सर्कस कंपनियाँ 142

10.2 भारत में सर्कस उद्योग का पतन 143

11. भारत में मार्शल आर्ट 144

11.1 भारत में मार्शल आर्ट का संक्षिप्त इतिहास 144

11.2 प्राचीन ग्रंथों में मार्शल आर्ट का उल्लेख 144

11.3 भारत में मार्शल आर्ट के विभिन्न प्रकार 144

12. भारत की भाषाएँ 150

12.1 भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण 150
- 1. भारोपीय परिवार / इंडो-आर्यन ग्रुप 151
- 2. द्रविड़ समूह 153
- द्रविड़ भाषाओं का उप-भाग 153
- 3. चीनी-तिब्बती समूह 154
- 4. ऑस्ट्रिक समूह 155
- 5. नेग्रोइड समूह 156
- 6. अन्य भाषाएं 156
- इंडो-आर्यन और द्रविड़ समूह की भाषाओं के बीच अंतर 156

12.2 भारत में लिपियां 156
- सिंधु लिपि 156
- ब्राह्मी लिपि 157
- गुप्त लिपि 158
- खरोष्ठी लिपि 158
- वट्टेलुट्टू लिपि 158
- कदंब लिपि 159
- ग्रंथ लिपि 159
- शारदा लिपि 159
- गुरुमुखी लिपि 160
- देवनागरी लिपि 160
- मोड़ी या मोडी लिपि 160
- उर्दू लिपि 161

12.3 भारत की आधिकारिक भाषाएँ 161
- राज्यों द्वारा आधिकारिक भाषाओं की सूची 162
- संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा आधिकारिक भाषाओं की सूची 162

12.4 भारत में शास्त्रीय भाषाएं 163
- शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त होने से लाभ 163
- शास्त्रीय भाषाओं को समर्पित संस्थान 164

12.5 भारत में संकटग्रस्त और विलुप्त भाषाएँ 164
- भारत की पांच विलुप्त भाषाएँ 165
- भारत की 42 अति संकटग्रस्त भाषाएँ 165
- भाषाओं पर संकट के कारण 165
- सरकार द्वारा की गई पहल 166

12.6 क्या भारत में कोई राष्ट्रीय भाषा है? 167

13. भारत में धर्म 169

13.1 भारत में धर्मों का वर्गीकरण 169

13.2 हिन्दू धर्म 169
- उत्पत्ति और संक्षिप्त इतिहास 169
- आधारभूत सिद्धांत या अंतर्निहित दर्शन 169
- हिन्दू धर्म के पवित्र ग्रंथ या पुस्तकें 170
- हिन्दू धर्म के तहत प्रमुख संप्रदाय 171
- हिन्दू धर्म में प्रमुख आंदोलन 172
- हिन्दू धर्म का विश्व पर प्रभाव 173

13.3 बौद्ध धर्म 173
- आधारभूत सिद्धांत या अंतर्निहित दर्शन 174
- चार बौद्ध परिषद 174
- बौद्ध धर्म के प्रमुख संप्रदाय/ उप-संप्रदाय 175

13.4 जैन धर्म 177
- आधारभूत सिद्धांत या अंतर्निहित दर्शन 177
- जैन धर्म के महत्वपूर्ण सिद्धांत 177
- प्रमुख संप्रदाय/उप-संप्रदाय 178
- जैन परिषद/संगीति 178
- बौद्ध धर्म और जैन धर्म का तुलनात्मक विश्लेषण 178

13.5 सिख धर्म 179

- उत्पत्ति और संक्षिप्त इतिहास 179
- सिख धर्म के दस गुरु 179
- आधारभूत सिद्धांत या अंतर्निहित दर्शन 180
- प्रमुख संप्रदाय/उप-संप्रदाय 180

13.6 इस्लाम 180
- उत्पत्ति और संक्षिप्त इतिहास 180
- आधारभूत सिद्धांत या अंतर्निहित दर्शन 180
- पवित्र ग्रंथ या पुस्तकें 181
- पवित्र स्थान (तीर्थयात्रा) 181
- प्रमुख संप्रदाय/उप-संप्रदाय 181
- इस्लाम में प्रमुख आंदोलन 181

13.7 ईसाई धर्म 182
- उत्पत्ति और संक्षिप्त इतिहास 182
- आधारभूत सिद्धांत या अंतर्निहित दर्शन 182

13.8 पारसी धर्म 182
- उत्पत्ति और संक्षिप्त इतिहास 182
- आधारभूत सिद्धांत या अंतर्निहित दर्शन 183
- पवित्र ग्रंथ या किताबें 183

13.9 यहूदी धर्म 183
- संक्षिप्त इतिहास 183
- पवित्र ग्रंथ या पुस्तकें 183
- प्रमुख उप-संप्रदाय 183

13.10 भारत में अन्य धर्म 184

14. भारतीय साहित्य 186

14.1 साहित्य की शैलियाँ 186

14.2 साहित्य के प्रकार 186

14.3 उपदेशात्मक और कथात्मक ग्रंथ के बीच अंतर 186

14.4 प्राचीन भारत में साहित्य 186

14.5 वेद 186
- उप-वेद 189
- ब्राह्मण 189
- आरण्यक 190
- उपनिषद 190

14.6 महाभारत और रामायण 191

14.7 शास्त्रीय संस्कृत साहित्य 192

14.8 पाली और प्राकृत में साहित्य 194

14.9 बौद्ध साहित्य 194
- बौद्ध धर्म का प्रामाणिक साहित्य 194
- बौद्ध धर्म का गैर-प्रामाणिक साहित्य 195
- अन्य बौद्ध साहित्यिक ग्रंथ 195
- संस्कृत में अन्य बौद्ध साहित्य 195

14.10 जैन साहित्य 196
- जैन आगम 196
- कुछ अन्य महत्वपूर्ण जैन रचनाएँ हैं 197

14.11 सिख साहित्य 197

14.12 पारसी साहित्य 198

14.13 द्रविड़ साहित्य 199
- तमिल साहित्य 199
- मलयालम सहित्य 200
- तेलुगु साहित्य 200
- कन्नड़ साहित्य 201

14.14 मध्यकालीन साहित्य 202
- फारसी 202
- उर्दू 203
- हिंदी साहित्य 204

14.15 आधुनिक साहित्य 205
- बंगाली साहित्य 205
- असमिया साहित्य 205
- ओडिया साहित्य 206
- गुजराती सहित्य 206
- राजस्थानी साहित्य 206
- सिन्धी साहित्य 206
- कश्मीरी साहित्य 207
- पंजाबी साहित्य 207
- मराठी सहित्य 208

15. भारतीय दर्शन 210

15.1 भारतीय दर्शन की विशेषताएं 210

15.2 भारतीय दर्शन का विकास 210
- वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व - 600 ईसा पूर्व) 210
- महाकाव्य काल (600 ईसा पूर्व - 200 ईस्वी) 210
- सूत्र काल (200 ईस्वी के बाद - ईसा युग की पहली शताब्दी) 210
- रुढ़िवादी या पांडित्य काल (सूत्र काल से 17वीं शताब्दी ईस्वी तक) 211
- आधुनिक काल (17वीं शताब्दी के बाद) 211

15.3 भारतीय दर्शन की विचारधाराएँ 211
- रूढ़िवादी संप्रदाय 212

16. भारत में कैलेंडर 220

16.1 कैलेंडरों के प्रकार और प्रयोग की जाने वाली प्रणाली 220
- सौर कैलेंडर 220
- चंद्र कैलेंडर 220

- चंद्र-सौर कैलेंडर 220
- भारतीय कैलेंडर के विभिन्न प्रकार 221
- विक्रम संवत, शक संवत, हिजरी और ग्रेगोरियन का तुलनात्मक विश्लेषण 223

16.2 भारतीय (राष्ट्रीय) कैलेंडर 224
- पृष्ठभूमि 224

17. भारतीय सिनेमा 226

17.1 भारतीय सिनेमा का इतिहास 226
- मूक फिल्मों का युग (1919-1931) 226
- मूक फिल्मों की विशेषताएँ 226
- आजादी के पूर्व अमूक (बोलती/टॉकीज) सिनेमा (1931-1947) 227
- आजादी के बाद का सिनेमा (1948-वर्तमान) 227
- आजादी के बाद के सिनेमा की विशेषताएँ 228

17.2 दक्षिण भारतीय सिनेमा 229

17.3 भारतीय सिनेमा का महत्त्व 230

17.4 भारतीय फिल्मों का विनियमन 231
- विवादास्पद फिल्में और उनसे सम्बंधित मुद्दे 231
- भारतीय चलचित्र अधिनियम, 1952 231

18. भारत में त्यौहार तथा मेले 233

18.1 भारत में त्यौहार 233

18.2 भारत के राष्ट्रीय त्यौहार 233
- गणतंत्र दिवस 233
- स्वतंत्रता दिवस 233
- गाँधी जयंती 233

18.3 धार्मिक त्यौहार 233
- हिंदू त्यौहार 234
- मुस्लिम त्यौहार 235
- सिख त्यौहार 235
- ईसाई त्यौहार 236
- जैन त्यौहार 236
- बौद्ध त्यौहार 236
- सिंधी त्यौहार 236
- पारसी त्यौहार 237

18.4 भारत में राज्यवार त्यौहारों की सूची 237

18.5 भारत के फसल उत्सवों की सूची 243

18.6 भारत में मेले 244

18.7 त्यौहारों और मेलों का महत्व 245
- भारत में पर्यटन महोत्सव से जुड़ी चुनौतियाँ 246
- सरकार की पहल- 246

19. मूर्त सांस्कृतिक विरासत 247

19.1 सांस्कृतिक विरासत का महत्व 247

19.2 मूर्त और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का विरोधाभास 247

19.3 मूर्त सांस्कृतिक विरासत क्या है? 248

19.4 मूर्त सांस्कृतिक विरासत का महत्व 248

19.5 मूर्त सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण 249
- अंतर्राष्ट्रीय विकास 249

19.6 यूनेस्को की मूर्त विश्व विरासत स्थलों की सूची 249

19.7 नामित स्थलों की कानूनी स्थिति 250

19.8 भारत में यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल 250
- राज्यवार सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत स्थलों की सूची 250

19.9 अंतर-क्षेत्रीय प्राकृतिक विरासत 267

20. अमूर्त सांस्कृतिक विरासत 269

20.1 अमूर्त सांस्कृतिक विरासत 269
- अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की विशेषताएँ 269

20.2 यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची 270
- अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की यूनेस्को सूची में भारतीय तत्व 270
- भारत में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए सरकार की पहल 277

21. कानून और संस्कृति 280
- अनुच्छेद 29 280
- अनुच्छेद 49 280
- अनुच्छेद 51क (च) 280

21.1 प्राकृतिक विरासत के संरक्षण के लिए विधायी प्रावधान 280
- AMSAR अधिनियम या प्राचीन स्मारक तथा पुरातत्व स्थल और अवशेष अधिनियम 1958 280
- प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम, 1904 281
- पुरावशेष (निर्यात नियंत्रण) अधिनियम, 1947 281
- लोक अभिलेख अधिनियम, 1993 281

21.2 संस्कृति मंत्रालय 281
- राष्ट्रीय विरासत शहर विकास और वृद्धि योजना (हृदय) 282
- एक विरासत अपनाएं अपनी धरोहर, अपनी पहचान 282
- तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक संवर्द्धन अभियान (प्रशाद) 282
- स्वदेश दर्शन योजना 282
- कला संस्कृति विकास योजना 282

- संग्रहालय का विकास 282
- पुस्तकालयों और अभिलेखागार का विकास 283
- पांडुलिपियों पर राष्ट्रीय मिशन 283

22. भारत में सिक्का प्रणाली 284

22.1 मुद्रा की आवश्यकता 284

22.2 सिक्कों के अध्ययन का महत्व 284

22.3 भारत में सिक्का प्रणाली का विकास 285
- आहत मुद्राओं की खोज 285

22.4 प्राचीन भारत में सिक्के 285
- महाजनपद के आधार पर 285
- प्राचीन भारतीय राजवंशों के सिक्के 287
- दक्षिण भारतीय सिक्के 288

22.5 मध्यकालीन भारत के सिक्के 290
- दिल्ली सल्तनत 290
- खिलजी राजवंश 291
- तुगलक वंश 291
- विजयनगर साम्राज्य 292
- मराठा संघ 293
- अवध प्रांत 293
- मैसूर 294
- सिक्ख 294
- हैदराबाद 295

22.6 स्वतंत्र भारत में सिक्का प्रणाली 295
- अवरुद्ध श्रृंखला/ Frozen series (1947-1950) 296
- आना श्रृंखला 296
- नया पैसा (सिक्का) या दशमलव श्रृंखला 297
- पैसा (सिक्का) श्रृंखला (1964 के बाद से) 298
- नया मूल्यवर्ग 300
- हस्त मुद्रा श्रृंखला 300

23. सांस्कृतिक संस्थान 301

23.1 भारत के प्रमुख सांस्कृतिक संस्थान 301
- 1. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण / Archaeological Survey of India (ASI) 301
- 2. राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण/ National Monument Authority (NMA) 302
- 3. सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र/Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) 302
- 4. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद/ Indian Council for Cultural Relations (ICCR) 302
- 5. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र Indira Gandhi National Centre for Arts (IGNCA) 303
- 6. ऑलइंडिया रेडियो / All India Radio (AIR) 303
- 7. नेहरू मेमोरियल संग्रहालय और पुस्तकालय / Nehru Memorial Museum and Library (NMML) 304
- 8. भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार/ National Archives of India 304
- 9. साहित्य अकादमी/Sahitya akademi 304
- 10. संगीत नाटक अकादमी/ Sangeet Natak Akademi 305
- 11. ललित कला अकादमी / Lalit Kala Akademi 305
- 12. फिल्म समारोह निदेशालय/ Directorate of Film Festivals 306
- 13. भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद/ Indian Council for Historical Research 306
- 14. कला और विरासत के लिए भारतीय राष्ट्रीय न्यास/Indian National Trust for Art and Cultural Heritage (INTACH) 306
- 15. पाँडुलिपियों के लिए राष्ट्रीय मिशन / National Mission for Manuscripts (NMM) 307
- 16. भारतीय शिल्प परिषद/ The Crafts Council of India (CCI) 307

24. पुरस्कार और सम्मान 308

24.1 नागरिक पुरस्कार 308
- भारत रत्न 308
- कुछ देशों के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 309
- पद्म पुरस्कार 309

24.2 राष्ट्रीय स्तर पर साहित्य संबंधी पुरस्कार 310
- ज्ञानपीठ पुरस्कार 310
- साहित्य अकादमी पुरस्कार 310
- सरस्वती सम्मान 311
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर साहित्य संबंधी पुरस्कार 312

24.3 पत्रकारिता में राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार 312
- रामनाथ गोयनका पुरस्कार 312
- पत्रकारिता में उत्कृष्टता के लिए राजा राम मोहन राय पुरस्कार 312
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पत्रकारिता में पुरस्कार 312

24.4 खेल और साहसिक कार्य संबंधी पुरस्कार 312
- खेल रत्न पुरस्कार 313
- अर्जुन पुरस्कार 313
- द्रोणाचार्य पुरस्कार 313
- मेजर ध्यानचंद पुरस्कार 313
- मौलाना अबुल कलाम आजाद ट्रॉफी 313
- राष्ट्रीय खेल प्रोत्साहन पुरस्कार 313
- तेनजिंग नोर्गे राष्ट्रीय साहसिक पुरस्कार 314

24.5 फिल्म संबंधित पुरस्कार 314
- राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 314
- दादा साहेब फाल्के पुरस्कार 314
- ब्रिक्स फिल्म महोत्सव पुरस्कार 315

24.6 भारत के अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार 315
- इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार 315
- गांधी शांति पुरस्कार 315

प्रतिदर्श पेज

विशेषताएँ: इस स्थल के साथ कई अद्वितीय विशेषताएँ जुड़ी हुई हैं।

- दुर्ग और निचले नगर के बीच एक मध्य नगर था। यह विशेषता अन्य आईवीसी स्थलों में अनुपस्थित थी।
- लेकिन अनूठी विशेषता जो इसे अन्य स्थलों से अलग करती है, वह है इसका जल संचयन पद्धति। दो मौसमी धाराओं ने इस शुष्क भूमि को पानी प्रदान किया, लेकिन साल भर पानी सुनिश्चित करने के लिए जलाशयों की स्थापना की गई। इसके अलावा, इस क्षेत्र में चट्टानों को काटकर बनाए गए कुएँ भी देखे जा सकते हैं।

मौर्य वास्तुकला

चंद्रगुप्त मौर्य ने 322 ईसा पूर्व में नंद वंश के धनानंद को हराकर चाणक्य की मदद से मौर्य वास्तुकला और मौर्य राजवंश की स्थापना की। इसने भारतीय इतिहास में एक नए युग को चिह्नित किया, क्योंकि पहली बार, उपमहाद्वीप में एक अखिल भारतीय शासन स्थापित किया गया था। मौर्य काल अपनी विस्तारवादी नीतियों और प्रशासनिक ढाँचे के लिए जाना जाता है, लेकिन इस अवधि के अलावा बड़े पैमाने पर वास्तुकला की दुनिया में नए ढाँचे, मुख्य रूप से उपमहाद्वीप में स्तूप और स्तंभ जोड़े गए।

स्तूप

ये बुद्ध और अन्य भिक्षुओं के अवशेषों पर निर्मित अर्धगोलाकार टीले (गुम्बद) हैं। बड़े पैमाने पर, बौद्ध धर्म में रूपाँतरण के बाद मौर्य साम्राज्य के महान अशोक (268-232 ईसा पूर्व) के शासनकाल के दौरान पूरे भारत में स्तूपों का निर्माण शुरू हुआ। उनके शासन से पहले, केवल 8 या 10 स्तूपोंमें बुद्ध के अंतिम संस्कार के अवशेष थे।

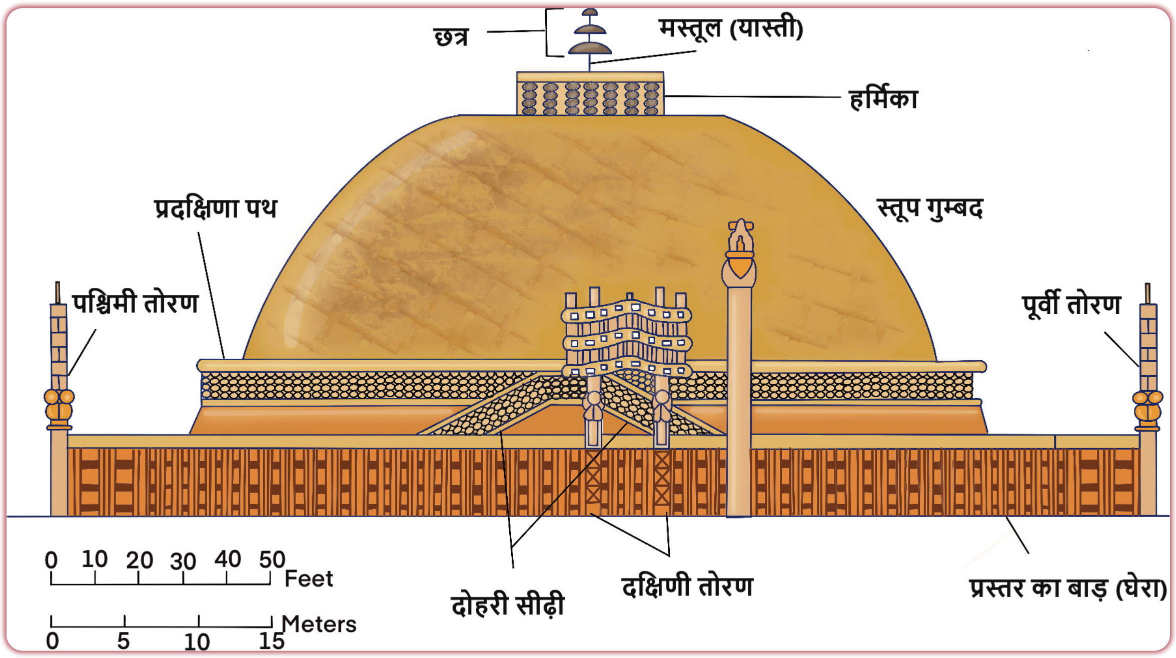

सांची स्तूप का मूल स्केच

स्तूप की विशेषताएँ

वे टीले के आकार की संरचनाएँ हैं जिनमें कई भाग शामिल हैं, जैसे कि

- **अंड:-** यह अर्धगोलाकार गुंबद है, जिसका निर्माण बुद्ध के अवशेषों पर किया गया है।
- **हर्मिका:-**यह अंड के शीर्ष पर स्थित होता है, जिसमें एक सजावटी वर्गाकार छज्जा है।
- **छत्र:** इसमें बौद्ध धर्म के तीन रत्नों का प्रतिनिधित्व करने वाले तीन पत्थर शामिल हैं: बुद्ध, धम्म और संघ।
- **वेदिका:-**पूरा स्तूप लकड़ी या पत्थर की रेलिंग (घेरा) से घिरा हुआ होता है जिसे वेदिका कहा जाता है।
- **तोरण:-**वे स्तूप के चारों ओर औपचारिक द्वार हैं और जातक कथाओं सहित कई रचनाओं और कहानियों के साथ इसकी चर्चा की जाती है।

1. इस गुफा में शैल कला, पेट्रोग्लिफ्स और जैन चित्र हैं। भित्ति चित्र गुफाओं की छतों और दीवारों पर भी देखे जा सकते हैं।
2. इन भित्ति चित्रों को जैन भिक्षुओं द्वारा चित्रित किया गया था जो गुफाओं में निवास कर रहे थे। इन चित्रों को बनाने के लिए फ्रेस्को और टेम्परा दोनों तकनीकों का इस्तेमाल किया गया था।
3. इन गुफाओं की दीवारों पर पौधों और हंसों के चित्रलिपि सुशोभित थे। गुफा की दीवारों पर तमिल–ब्राह्मी में शिलालेख भी देखे जा सकते हैं।
4. इन चित्रों में अस्थिथिक पालकों (आठ कोनों की रक्षा करने वाले देवता) और जैन धर्म की कहानियों को दर्शाया गया है। आठ कोनों की रक्षा करने वाले देवता हैं अग्नि, वायु, कुबेर, इंद्र, यम, निरुथी और वरुण।

सित्तनवासल गुफा चित्रकला

सित्तनवासल चट्टानों को काटकर बनाया गया गुफा मंदिर तमिलनाडु राज्य में स्थित है। सित्तनवासल या चित्तनवासल गुफा चित्र पहली शताब्दी ईसा पूर्व से 10वीं शताब्दी ईस्वी तक के हैं जो जैन धर्म पर आधारित हैं। ये चित्र बाघ और अजंता चित्रों के समान हैं। सित्तनवासल रॉक कट गुफाओं का निर्माण पल्लव वंश के राजा महेंद्रवर्मन प्रथम द्वारा करवाया गया था, और बाद में 7वीं शताब्दी में पांड्य शासकों द्वारा इसका जीर्णोद्धार किया गया था।

चित्रों की विशेषताएं:

1. सित्तनवासल चित्रों को दीवारों, छत और स्तंभों पर चित्रित किया गया है।
2. सित्तनवासल चित्रकला के चित्रों का सबसे सामान्य विषय जैन समवसरण (प्रवचन हॉल) है।
3. चित्रकारी में प्रयुक्त रंग वनस्पति और खनिज रंगों से निकाले गए थे। यह पतले गीले चूने के प्लास्टर की सतह के साथ रंगों को मिलाकर किया गया था।
4. चित्रों को चित्रित करने के लिए प्रयुक्त रंग नारंगी, हरा, पीला, सफेद, नीला और काला है।

सित्तनवासल गुफा चित्रकला

क्या आप जानते हैं?

समवसरण एक सुंदर हॉल है जहां तीर्थंकर केवला या कैवल्य प्राप्त करने के बाद उपदेश देते हैं। भव्य दृश्य देखने के लिए अप्सराएं, देवता और बैल व हाथी जैसे जानवर हॉल में इकट्ठा होते हैं। सित्तनवासल में समवसरण चित्रकला जैनियों के बीच एक विशेष स्थान रखती है। सित्तनवासल में चित्रों का केंद्रीय तत्व मछलियों का एक तालाब है, इस तालाब में फूल भिक्षुओं द्वारा एकत्र किए जाते हैं, और शांत स्थान हंसों, बत्तखों और मछलियों से घिरा हुआ है।

रावण छाया शैलाश्रय

रावण छाया शैलाश्रय ओडिशा के क्योंझर जिले में स्थित हैं । यह चित्र 7 वीं शताब्दी ईस्वी के हैं।

चित्रों की प्रमुख विशेषताएं:

1. इस चित्रकारी का नाम राक्षस राजा रावण की छाया को संदर्भित करता है जो एक बड़े गोलाकार पत्थर के निचले हिस्से में दिखाई देता है।
2. रावण छाया शैलाश्रय चित्रकला फ्रेस्को पेंटिंग हैं जो आधे खुले छतरी के आकार में हैं।

रावण छाया शैलाश्रय चित्रकलाह

© Study IQ Publications

पुतली कला	क्षेत्र	प्रमुख विशेषताएं
बोम्मागलट्टा 	तमिलनाडु	• इनका विषय आध्यात्मिक और पौराणिक कथाओं पर आधारित होता है। • यह छड़ और स्ट्रिंग / धागा पुतलियों दोनों की तकनीकों को एक साथ जोड़ती है। • एक एकल पुतली कलाकार पूरे पुतली शो को संचालित करता है। • बोम्माालट्टा ईश्वर की पूजा अर्चना के साथ शुरू होता है और हास्य-विनोद की कहानियों के साथ चलता है। • पुतली शो मंडली में 5 से 8 सदस्य होते हैं। • पुतलियां लकड़ी से बनी होती हैं। इन्हें संचालित करने के लिये तार एक लोहे की छल्ले से बंधे होते हैं जिसे पुतली कलाकार अपने सिर पर मुकुट की तरह पहनता है। • ये पुतलियां सभी पारंपरिक भारतीय पुतली कला में सबसे बड़ी, सबसे भारी होती हैं। • ये कपड़े, लकड़ी, चमड़े या अन्य सामग्रियों से बनी होती हैं।
गोम्बेयट्टा 	कर्नाटक	• इनका विषय महाभारत, रामायण और पुराणों जैसे धार्मिक ग्रंथों पर आधारित होता है। • इन्हें पारंपरिक थिएटर रूप यक्षगान के पात्रों की तरह डिजाइन किया जाता है। • पैरों, कंधों, कोहनी, कूल्हों और घुटनों पर कठपुतलियों के जोड़ होते हैं। • इन कठपुतलियों में एक प्रोप से बंधे पांच से सात तारों द्वारा मूवमेंट किया जाता है। • कठपुतलियों के कुछ जटिल गतिविधियों को एक समय में दो से तीन कठपुतली कलाकारों द्वारा किया जाता है। • यह संगीत के साथ संचालित किया जाता है जो खूबसूरती से लोक और शास्त्रीय तत्वों का मिश्रण करता है।
कलासूत्री बहौल्या 	महाराष्ट्र	• यह रामायण के थीम पर आधारित होता है। • कलाकार, कठपुतली कलाकारों के परिवारों के वंशज हैं जो मूल रूप से राजस्थान और गुजरात से होते हैं। • कठपुतली कलाकार प्रदर्शन शुरू होने से पहले प्रार्थना करते हैं, जो गणेश के अपने चूहे पर सवार होने के साथ शुरू होता है। ज्ञान की देवी सरस्वती प्रकट होती हैं और भगवान गणेश के साथ नृत्य करती हैं। • प्रदर्शन का समापन शिव के बैल नंदी की सवारी करते हुए होता है। • छोटी कठपुतलियों को लकड़ी से बनाया जाता है। वे कपड़े, पगड़ी और गहने पहनते हैं। • कंधों और घुटनों से जुड़ी कठपुतलियों के पैरों से तार नहीं जुड़े होते हैं, और ये मुक्त रहते हैं। • एक गायक गीत गाता है और बारी-बारी से, तबला और झांझ बजाता है।
नूल पावाकूथु 	केरल	• इनका विषय रामायण और महाभारत पर आधारित है। • कठपुतली कलाकार नायर समुदाय से होते हैं। ये कठपुतलियां एक शाही परिवार की देखभाल और संरक्षण में रहती हैं। • यह मंदिर के त्योहारों के दौरान प्रदर्शित किया जाता है। • कठपुतलियों को दो समूहों में वर्गीकृत किया गया है। एक समूह में ऐसे कठपुतलियों को शामिल किया गया है जो सामान्य लोक कथाओं को दर्शाते हैं, जबकि दूसरे का उपयोग रामायण और महाभारत जैसे पौराणिक कथाओं और महाकाव्यों के दृश्यों को प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है। • कठपुतली शो का शुरुआती दृश्य हास्य-विनोद से भरा होता है। • महिला चरित्र को सबसे पहले पेश किया जाता है। • शो में कोरू और उन्नाइकन नाम के दो जोकर होते हैं। • कठपुतलियों की ऊंचाई 2 से 2.5 फीट होती है। • ये कलात्मक नक्काशी और बहुरंगी चित्रों से सजी लकड़ी से बने होते हैं। • संचालन में सरलता के लिए गर्दन, हाथ, पैर और कमर पर जोड़ बनाए जाते हैं।

- यह कैलेंडर ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह के जन्मदिन पर आधारित है।
- यह जनवरी के पहले दिन से शुरू होने वाला एक सौर वर्ष है और इसमें 365 दिन, 5 घंटे, 48 मिनट और 46 सेकंड होते हैं।
- चूंकि इन अतिरिक्त घंटों को एक वर्ष के लिए कैलेंडर में शामिल नहीं किया जा सकता था, इसलिए अंतर्संबंध की युक्ति को अपनाया गया और हर चार साल में फरवरी माह में एक दिन जोड़ने की प्रणाली प्रचलन में आई।

क्या आप जानते हैं?

हिन्दू कैलेंडर: हिंदू वर्ष एक चंद्र वर्ष है। इसलिए एक महीने में दिनों की संख्या, इसकी कक्षा में चंद्रमा की गति के अनुसार 29 या 30 हो सकती है। प्रत्येक माह को दो पक्षों या पखवाड़ों में विभाजित किया जाता है, अर्थात शुक्ल पक्ष या अर्द्ध सौर जिसे सूद कहा जाता है और कृष्ण पक्ष या अर्द्ध चंद्र जिसे वद कहा जाता है। प्रत्येक पक्ष में पहली से 15 तारीख तक पंद्रह दिन होते हैं। अर्द्ध सौर के पंद्रहवें दिन को पूर्णिमा या पूर्ण चंद्र के दिन के रूप में जाना जाता है और अर्द्ध चंद्र के पंद्रहवें दिन को अमावस्या या नव चंद्र के दिन के रूप में जाना जाता है जो महीने का आखिरी दिन भी होता है। चंद्र प्रणाली के अनुसार एक वर्ष के दिनों की कुल संख्या 355 से 356 होती है। नक्षत्र या तारामंडल तारों का समूह है। बारह स्थान या ग्रहण या राशियाँ हैं। सूर्य एक वर्ष के दौरान इनसे होते हुए गुजरता है और इनका नाम नक्षत्रों के नाम पर रखा गया है। कुल 28 नक्षत्र या तारामंडल हैं। क्योंकि नक्षत्र आकार में भिन्न-भिन्न होते हैं अत:उन सभी में तारों की संख्या समान नहीं होती है। कुछ नक्षत्रों में तो केवल एक या दो तारे होते हैं। प्रत्येक राशि दो से तीन नक्षत्रों से मिलकर बनी होती है। हिंदू कैलेंडर सौर वर्ष को दो हिस्सों में विभाजित करता है: उत्तरायण और दक्षिणायन। उत्तरायण, मकर संक्रांति से कर्क संक्रांति तक के पहले छह महीने हैं, यानी पौष (जनवरी) से आषाढ़ (जून) तक। इसे ईश्वर का दिन कहा जाता है। दक्षिणायन जुलाई से दिसंबर तक अंतिम छह महीने होते हैं। इसे ईश्वर की रात कहा जाता है।

क्या आप जानते हैं?

पारसी कैलेंडर: भारत में पारसी समुदाय शहंशाही कैलेंडर का पालन करता है जिसमें लीप ईयर (अधि वर्ष) नहीं होता है। पारसी वर्ष में पहले ग्यारह महीनों में प्रत्येक में 30 दिन होते हैं। 12वें और अंतिम महीने में 35 दिन होते हैं, जिसमें पाँच दिन या अंत में गाथा शामिल होती है। इस प्रकार एक वर्ष में 365 दिन होते हैं।

बौद्ध कैलेंडर: बौद्ध कैलेंडर का उपयोग सम्पूर्ण दक्षिण-पूर्व एशिया में किया जाता है और यह पुराने हिंदू कैलेंडर पर आधारित है। यह नक्षत्र वर्ष का उपयोग करता है। हालाँकि इसका उपयोग एक आधिकारिक कैलेंडर के रूप में नहीं किया जाता है, परन्तु बौद्ध कैलेंडर का उपयोग महत्वपूर्ण त्योहारों को दर्शाने के लिए किया जाता है।

हिब्रू कैलेंडर: हिब्रू कैलेंडर, जिसे यहूदी कैलेंडर के नाम से भी जाना जाता है, मूलत: 10 ईस्वी से पहले बनाया गया था। इसमें पहले चंद्र महीनों का उपयोग किया गया था जिसमें हर 3 से 4 वर्ष में एक अतिरिक्त महीना जोड़ा जाता था। समय के साथ, गणितीय गणनाओं ने उस प्रणाली को बदल दिया। आज, इसका उपयोग यहूदी धार्मिक अवकाशों की तारीखों को निर्धारित करने, दिन के लिए उपयुक्त धार्मिक ग्रन्थ का चयन करने और आनुष्ठानिक आयोजनों के संचालन हेतु किया जाता है।

विक्रम संवत, शक संवत, हिजरी और ग्रेगोरियन का तुलनात्मक विश्लेषण

	विक्रम संवत्	शक संवत्	हिजरी	ग्रेगोरियन
सूत्रपात	57 ईसा पूर्व.	78 ईस्वी	622 ईस्वी	45 ईसा पूर्व.
अपनाया गया	57 ईसा पूर्व.	78 ईस्वी	622 ईस्वी	1582
शुरुआत	चैत्र मास की अमावस्या के बाद पहले दिन से ही नववर्ष की शुरुआत हो जाती है?	ग्रेगोरियन लीप वर्ष को छोड़कर (जब यह 21 मार्च को शुरू होता है) प्रतिवर्ष 22 मार्च।	चंद्रमा की गति के आधार पर महीनों का आरंभ और अंत होता है।	जनवरी के पहले दिन से शुरू होता है।
दिनों की संख्या	354 दिन	365 दिन	354 दिन	365 दिन, 5 घंटे, 48 मिनट और 46 सेकंड
महीनों की संख्या	12 महीने	12 महीने	12 महीने	12 महीने
कैलेंडर का आधार	चंद्र-सौर	चंद्र-सौर	चंद्र	सौर

© Study IQ Publications